सम्पादक

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

सहायक

मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ – 226007

फोन : 0522–2740406

फैक्स : 0522–2741221

E-mail : nadwa@sancharnet.in

nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग

लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

अक्तूबर, 2013 वर्ष 12 अंक 08

ईदे क़ुर्बां

(एक बच्चे का गीत)

अब्बू ने कुर्बानी की है हम सब हाथ बटाएंगे
कुर्बानी के हदये लेले घर घर जा पहुंचाएंगे
फिर अम्मी की मदद करेंगे बिर्यानी पकवाएंगे
भुना गोश्त हम खाएंगे और गर्म मुतंजन खाएंगे
नल्ली का गूदा हम लेकर बड़े मज़े से खाएंगे
बड़े मज़े से खाएंगे और हम्द खुदा की गाएंगे
ईदे कुर्बां बड़ी है नेअ़मत यह सब को बतलाएंगे
या रब तेरा शुक्र हैं करते बेशक तू मन्नान है
तेरी रहमत नबी पे उतरे बेशक तू रहमान है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अ़तः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
बातें हज़रत इब्राहीम अ0 की	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	9
काबतुल्लाह के मुकद्दस गोशे	तसनीम फ़ातिमा	12
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	13
आलम–ए–इस्लाम	जमाल अहमद नदवी	15
क़िस्सा ज़बीहुल्लाह का	अफ़ीफ़ा सिद्दीक़ा	16
मारक़–ए–ईमान व माद्दीयत	मौलाना अली मियाँ नदवी रह0	20
मोमिन की पहचान	फ़ौज़िया सिद्दीक़ा	25
क़ुर्बानी के मसाइल	इदारा	28
रौनक़ अली की मर्दानगी	इदारा	31
मदारिस–ए–इस्लामिया	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	33
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	34
मानवता का संदेश	इदारा	36
ये प्यार का पयाम है	मुहम्मद इसहाक़ नदवी	38
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़रः

अनुवाद :- और तुझसे पूछते हैं हुक्म हैज़ का कह दे वह गंदगी है सो तुम अलग रहो औरतों से हैज़ के वक़्त और करीब न हो उनके जब तक पाक न होवें, फिर जब खूब पाक हो जावें तो जाओ उनके पास जहां से हुक्म दिया तुमको अल्लाह ने बेशक अल्लाह को पसन्द आते हैं, तौबा करने वाले और पसन्द आते हैं गन्दगी से बचने वाले(222)। तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं सो जाओ अपनी खेती में जहां से चाहो, और आगे की तदबीर करो अपने वास्ते और डरते रहो अल्लाह से और जान रखो कि तुम को उससे मिलना है और खुशखबरी सुना ईमान वालों को(223)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. हैज़ कहते हैं उस खून को जो औरतों की आदत है उस हालत में मुजामअ़त करना नमाज़, रोज़ा सब हराम हैं और खिलाफ़ आदत जो खून आये वह बीमारी है उसमें मुजामअ़त, नमाज़ रोजा सब दुरुस्त हैं उसका हाल ऐसा है जैसा ज़ख़्म या फस़द से खून निकलने का। यहूद व मजूस हालत–ए–हैज़ में औरत के साथ खाने और एक घर में रहने को भी जायज़ न समझते थे और नस़ारा मुजामअ़त से भी परहेज़ न करते थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया तो उस पर यह आयत उतरी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस पर साफ़ फरमा दिया कि मुजामअ़त इस हालत में ह़राम है और उनके साथ खाना पीना रहना सहना सब दुरुस्त हैं। यहूद का इफरात और नसारा की तफरीत़ दोनों मरदूद हो गयी।

2. पाक होने में यह तफ़्सील है कि अगर हैज़ अपनी पूरी मुद्दत यानी दस दिन पर मौकूफ (रुका) हुआ तो उसी वक़्त से मुजामअ़त दुरुस्त है और अगर दस दिन से पहले खत्म हो गया मसलन छः रोज़ के बाद और औरत की आ़दत भी छः रोज थी तो मुजामअ़त खून के रुकते ही दुरुस्त नहीं, बल्कि जब औरत गुस्ल करले या नमाज़ का वक़्त खत्म हो जाए उसके बाद मुज़ामअत दुरुस्त होगी। और अगर औरत की आ़दत सात या आठ दिन की थी तो उनके दिनों के पूरा करने के बाद मुजामअ़त दुरुस्त होगी।

3. जिस मौक़े से मुजामअ़त की इजाज़त दी है यानी आगे की राह से कि जहाँ से बच्चा पैदा होता है दूसरा मौक़ा यानी लिवात़त ह़राम है।

4. यानी जो तौबा करते हैं गुनाह से जो उनसे इत्तिफाकियः सादिर हुआ

शेष पृष्ठ.....24 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

फराइज़ के साथ सुन्नते मुवक्कदाः की फज़ीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे हबीबा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाते हुए सुना है कि जिस शख़्स ने दिन में बारह रकअ़तें अल्लाह के लिए पढ़ीं उसके लिए जन्नत में एक घर बनाया जायेगा। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ दो रकअ़तें जुहर से पहले और दो रहअ़तें उसके बाद और दो रकअ़तें मग़रिब के बाद और दो रकअतें जुमा के बाद और दो रकअ़तें इशा के बाद पढ़ीं हैं। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुगफ़्फल रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर दो अज़ानों के दरमियान नमाज़ है, हर दो अज़ानों के दरमियान नमाज़ है, तीसरी बार फरमा कर इरशाद फरमाया जो चाहे (यानी जिसका जी चाहे) पढ़े और जिसका जी चाहे न पढ़े। (बुख़ारी—मुस्लिम)

सुबह की सुन्नत की ताकीद-

हज़रत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुहर से पहले चार रकअ़तें कभी नहीं छोड़ीं। (बुख़ारी)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जैसी दो रकअत फज्र की सुन्नत की निगहदाश्त रखते थे ऐसी किसी दूसरी नफलों की पाबंदी नहीं फरमाते थे। (बुख़ारी—मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि फज्र की दो रकअ़त सुन्नत दुनिया और दुनिया की हर चीज़ से बेहतर है। (मुस्लिम)

और बुखारी व मुस्लिम दोनों की मुत्तफिका रिवायतों में है कि फज्र की दो सुन्नतें मुझे पूरी दुनिया से ज़्यादा महबूब हैं।

हज़रत बिलाल इब्न रबाह रज़ि0 से रिवायत है (यह—रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुअज़्ज़िन थे) कि वह हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुबह की नमाज के लिए बुलाने आये हज़रत आइशा रज़ि0 ने उनको बातों में लगा लिया कुछ उनसे पूछने लगीं, उसमें इतनी देर लगी कि सुबह बिल्कुल ज़ाहिर हो गयी। हज़रत बिलाल रज़ि0 ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुकारना शुरुअ़ किया बराबर पुकारते रहे लेकिन हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ न लाये फिर जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाये और नमाज़ पढ़ा चुके तो हज़रत बिलाल रज़ि0

शेष पृष्ठ.....14 पर

बातें हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उच्च श्रेणी के पैग़म्बरों में से हैं। कहा जाता है कि आप हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की सन्तान में ग्यारहवीं पीढ़ी में हैं। आपकी सन्तान में पैग़म्बरी चलती रही। हज़रत इस्हाक़ व हज़रत इस्माईल हज़रत याकूब, हज़रत यूसुफ और अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन सब पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो यह सब हज़रत इब्राहीम ही के कुंबे से हैं। यहाँ इब्राहीम अलैहिस्सलाम से सम्बन्धित कुर्आन में आई कुछ बातों का उल्लेख किया जाता है।

और याद करो, जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने बाप आज़र से कहा था "क्या तुम मूर्तियों को पूज्य बनाते हो? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में पड़ा देख रहा हूँ।" और इस प्रकार हम हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आकाशों और धरती का राज्य दिखाने लगे (ताकि उसके ज्ञान का विस्तार हो), और इसलिए कि उसे विश्वास हो। इसलिए जब रात उस पर छा गई तो उसने एक तारा देखा। उसने अपनी क़ौम से कहा "इसे मेरा रब ठहराते हो" फिर जब वह छिप गया तो बोला "छिपने वाले से मैं प्रेम नहीं करता।" फिर जब उसने चाँद को चमकता हुआ देखा तो अपनी कौम से कहा "इसको मेरा रब ठहराते हो" फिर जब वह छिप गया तो कहा "यदि मेरा रब मुझे मार्ग न दिखाता तो मैं भी पथ भ्रष्ट लोगों में सम्मिलित हो जाता। "फिर जब उसने सूर्य को चमकता हुआ देखा तो अपनी क़ौम से कहा "इसे मेरा रब ठहराते हो! यह तो बहुत बड़ा है।" फिर जब वह भी छिप गया तो कहा "ऐ मरी क़ौम के लोगो! मैं विरक्त हूँ उनसे जिनको तुम साझी ठहराते हो। मैंने तो एकाग्र हो कर अपना मुख उसकी ओर कर लिया है, जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया। और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं"। उसकी क़ौम के लाग उससे झगड़ने लगे। उसने कहा "क्या तुम मुझसे अल्लाह के विषय में झगड़ते हो? जब कि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है। मैं उनसे नहीं डरता, जिन्हें तुम उसका सहभागी ठहराते हो, बल्कि मेरा रब जो कुछ चाहता है वही पूरा होकर रहता है। प्रत्येक वस्तु मेरे रब की ज्ञान—परिधि के भीतर है। फिर क्या तुम चेतोगे नहीं? और मैं तुम्हारे ठहराए हुए साझीदारों से कैसे डरूँ, जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का सहभागी उस चीज़ को ठहराया है, जिसका उसने तुम पर कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया? अब दोनों फ़रीक़ों में से कौन अधिक निश्चिन्त रहने का अधिकारी है? बताओ यदि तुम जानते हो। जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान में किसी (शिर्क) जुल्म की

मिलावट नहीं की, वही लोग हैं जो भय मुक्त हैं और वही सीधे मार्ग पर हैं। यह है हमारा वह तर्क जो हमने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को उसकी अपनी कौम के मुक़ाबले में प्रदान किया था। हम जिसे चाहते हैं दर्जे (पद) में ऊँचा कर देते हैं। निःसन्देह तुम्हारा रब तत्वदर्शी, सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाला) है।

(6:74:83)

और इस किताब में इब्राहीम की चर्चा करो। निःसंदेह वह एक सत्यवान नबी था। जबकि उसने अपने बाप से कहा "ऐ मेरे बाप! आप उस चीज़ को क्यों पूजते हैं, जो न सुने और न देखे और न आपके कुछ काम आये?"

ऐ मेरे बाप! मेरे पास ऐसा ज्ञान आ गया है जो आपके पास नहीं आया। अतः आप मेरा अनुसरण करें, मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊँगा ऐ मेरे बाप! शैतान की बन्दगी न कीजिए। शैतान तो रहमान का अवज्ञाकारी है। ऐ मेरे बाप! मैं डरता हूँ कि कहीं आपको रहमान की कोई यातना न आ पकड़े और आप शैतान के साथी हो कर रह जाएँ। उसने कहा "ऐ इब्राहीम! क्या तू मेरे उपासयों से फिर गया है? यदि तू बाज़ न आया तो मैं तुझ पर पथराव कर दूँगा तू अलग हो जा मुझसे हमेशा के लिए।" कहा सलाम है आपको! मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूँगा। वह तो मुझ पर बहुत मेहरबान है। मैं आप लोगों को छोड़ता हूँ और उनको भी जिन्हें अल्लाह से हटकर आप लोग पुकारा करते हैं। मैं तो अपने रब को पुकारूँगा आशा है कि मैं अपने रब को पुकार कर बेनसीब नहीं रहूँगा। फिर जब वह उन लोगों से और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे उनसे अलग हो गया, तो हमने उसे इस्हाक़ और याकूब प्रदान किए और हर एक को हमने नबी बनाया। (19:41:49)

क्या तुमने उसको नहीं देखा, जिसने इब्राहीम से 'रब' के सिलसिले में झगड़ा किया था, इस कारण कि अल्लाह ने उसको राज्य दे रखा था? जब इब्राहीम ने कहा "मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है" उसने कहा "मैं भी तो जिलाता और मारता हूँ।" इब्राहीम ने कहा "अच्छा तो अल्लाह सूर्य को पूरब से लाता है, तो तू उसे पश्चिम से ले आ।" इस पर वह अधर्मी चकित रह गया। अल्लाह ज़ालिम लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता। (2:258)

और इससे पहले हमने इब्राहीम को उसकी हिदायत और समझ दी थी। और हम उसे भली भाँति जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा "ये मूर्तियाँ क्या हैं, जिनसे तुम लगे बैठे हो? वे बोले "हमने अपने बाप–दादा को इन्हीं की पूजा करते पाया है।" उसने कहा "तुम भी और तुम्हारे बाप–दादा भी खुली गुमराही में हो।" उन्होंने कहा "क्या तू हमारे पास सत्य लेकर आया है या यूं ही खेल कर रहा है?" उसने कहा "नहीं बल्कि बात यह है कि तुम्हारा रब आकाशों और धरती का रब है, जिसने उनको पैदा किया है और मैं

इस पर तुम्हारे सामने गवाही देता हूँ। और अल्लाह की क़सम! इसके पश्चात की तुम पीठ फेर कर लौटो, मैं तुम्हारी मूर्तियों के साथ अवश्य एक चाल चलूंगा।'' इसलिए उसने उन्हें खण्ड–खण्ड कर दिया सिवाय उनकी एक बड़ी के, शायद कि वे उसकी ओर रुजू करें। वे कहने लगे ''किसने हमारे देवताओं के साथ यह हरकत की है? निश्चय ही वह कोई ज़ालिम है।'' (कुछ लोग) बोले ''हमने एक नवयुवक को, जिसे इब्राहीम कहते हैं, उनके विषय में कुछ कहते सुना है।'' उन्होंने कहा ''तो उसे ले आओ लोगों की आँखों के सामने कि वे भी गवाह रहें।'' उन्होंने कहा तूने हमारे देवों के साथ यह हरकत की है, ऐ इब्राहीम।'' उसने कहा ''नहीं, बल्कि उनके इस बड़े ने की होगी, उन्हीं से पूछ लो, यदि वे बोलते हों, तब वे अपनी ओर पलटें और कहने लगे ''वास्तव में, ज़ालिम तो तुम्हीं लोग हो।'' किन्तु फिर वे बिलकुल औंधे हो रहे। (फिर बोले) ''तुझे तो मालूम है कि ये बोलते नहीं।'' उसने कहा, ''फिर क्या तुम अल्लाह से अतिरिक्त उसे पूजते हो, जो न तुम्हें कुछ लाभ पहुंचा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुंचा सके?। धिक्कार है तुम पर, और उनपर भी, जिनको तुम अल्लाह को छोड़ कर पूजते हो! तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते?'' उन्होंने कहा ''जला दो उसे, और सहायक हो अपने देवताओं के, यदि तुम्हें कुछ करना है'' हमने कहा ''ऐ आग! ठंडी हो जा और सलामती बन जा इब्राहीम पर'' उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही, किन्तु हमने उन्हीं को घाटे में डाल दिया। और हम उसे और लूत को बचा कर उस भूभाग की ओर निकाल ले गए, जिसमें हमने दुनियावालों के लिए बरकतें रखी थीं। और हमने उसे इसहाक़ प्रदान किया और तदधिक याकूब भी। और प्रत्येक को हमने नेक बनाया। (21:51–72)

नोटः अब हमारे पाठक इसी अंक में छपा लेख ''किस्सा ज़बीहुल्लाह का'' पढ़ने के बाद यह पढ़ें।

और याद करो जब हमने इस घर (काबा) को लोगों के लिए केन्द्र और शन्तिस्थल बनाया और ''इब्राहीम के स्थल में से किसी जगह को नमाज़ की जगह बना लो।'' और इब्राहीम और इस्माईल को ज़िम्मेदार बनाया। ''तुम मेरे इस घर को तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ करने वालों के लिए और रुकू और सज्दा करने वालों के लिए पाक–साफ़ रखो।'' और याद करो जब इब्राहीम ने कहा ''ऐ मेरे रब! इसे शान्तिमय भू–भाग बना दे और इसके उन निवासियों को फलों की रोज़ी दे जो उनमें से अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएं।'' कहा ''और जो इनकार करेगा थोड़ा फ़ायदा तो उसे भी दूंगा, फिर उसे घसीट कर आग की यातना की ओर पहुंचा दूंगा और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है'' और याद करो जब इब्राहीम और इस्माईल इस घर की बुनियादें उठा रहे थे, (तो उन्होंने प्रार्थना की) ''ऐ हमारे रब! हमारी ओर से इसे स्वीकार कर ले,

निःसन्देह तू सुनता–जानता है। ऐ हमारे रब! हम दोनों को अपना आज्ञाकारी बना और हमारी संतान में से अपना एक आज्ञाकारी समुदाय बना और हमें हमारे इबादत के तरीक़े बता और हमारी तौबा क़बूल कर निःसन्देह तू तौबा क़बूल करने वाला, अत्यन्त दयावान है। ऐ हमारे रब! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा दे और उनकी आत्मा को विकसित करे। निःसन्देह तू प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।" (2:125–129)

और याद करो जब कि हमने इब्राहीम को अपने घर (काबा) का स्थान बता दिया (वहां उन्होंने घर का निर्माण कर लिया) और आदेश दिया कि "मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न ठहराना और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और खड़े होने और सजदा करने वालों के लिए पाक–साफ रखना।" और लोगों में हज के लिए उद्घोषणा कर दो कि "वे प्रत्येक गहरे मार्ग से पैदल भी और दुबली–दुबली ऊँटनियों पर, तेरे पास आएं। ताकि वे उन लाभों को देखें जो वहां उनके लिए रखे गए हैं। और कुछ ज्ञात और निश्चित दिनों में उन चौपाए अर्थात मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें, जो उसने उन्हें दिए हैं। फिर उसमें से स्वयं भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ।" फिर उन्हें चाहिए कि अपना मैल–कुचैल दूर करें और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस पुरातन घर का तवाफ़ करें। इन बातों का ध्यान रखो और जो कोई अल्लाह द्वारा निर्धारित मर्यादाओं का आदर करे, तो यह उसके रब के यहां उसी के लिए अच्छा है। और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल हैं, सिवाय उनके जो तुम्हें बताए गए हैं। तो मूर्तियों की गन्दगी से बचो और बचो झूठी बात से। (22:26–30)

और हमारे भेजे हुए (फरिश्ते) इब्राहीम के पास शुभ सूचना लेकर पहुंचे। उन्होंने कहा "सलाम हो!" उसने भी कहा "सलाम हो" फिर उसने कुछ विलम्ब न किया, एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। किन्तु जब देखा कि उनके हाथ उसकी ओर नहीं बढ़ हरे हैं तो उसने उन्हें अजनबी समझा और दिल में उनसे डरा। वे बोले "डरो नहीं, हम तो लूत की क़ौम की ओर भेजे गए हैं।" उसकी स्त्री भी खड़ी थी। वह इस पर हंस पड़ी। फिर हमने उसको इस्हाक़ और इस्हाक़ के बाद याकूब की शुभ सूचना दी। वह बोली "हाय मेरा हतभाग्य। क्या मैं बच्चे को जन्म दूंगी, जबकि मैं वृद्धा हूं और ये मेरे पति हैं बूढ़े? यह तो बड़ी ही अद्भुत बात है।" वे बोले "क्या अल्लाह के आदेश पर तुम आश्चर्य करती हो? घरवालो! तुम लोगों पर तो अल्लाह की दयालुता और उसकी बरकतें हैं। वह निश्चय ही प्रशंसनीय, गौरव वाला है।" फिर जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उसे शुभ सूचना भी मिली तो वह लूत

शेष पृष्ठ..... 11 पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

क़ैसरे रोम हिरक़्ल को दावते इस्लाम–

"बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से हिरक़्ल की जानिब जो रोम का अज़ीम (महान) है, सलाम हो उस पर जो सीधे रास्ते की पैरवी करे, बाद इसके मैं तुमको इस्लाम के कलमे की दावत देता हूँ, मुसलमान हो जाओ सलामत रहोगे और खुदा तुम्हें दोहरा अज्र देगा लेकिन अगर तुमने मुंह फेरा तो तमाम अरिसीयीन का गुनाह तुम पर होगा और अहले किताब तुम एक ऐसी बात को कुबूल कर लो जो हममें और तुममें समान है, वह यह है कि हम खुदा के सिवा किसी को न पूजें और हममें से कोई किसी को खुदा को छोड़ कर खुदा न बनाए, और तुम नहीं मानते तो गवाह रहो कि हम मानते हैं[2]।

हिरक़्ल की इन्क्वाईरी (जाँच-पड़ताल)–

"हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 कहते हैं कि उनसे अबू सुफियान ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ख़त शाम में गया था तो हम वहीं थे, दहिया कल्बी वह ख़त लाए थे, उन्होंने बुसरा के अमीर (गर्वनर) को दिया था और अमीरे बुसरा ने हिरक़्ल को दिया, हिरक़्ल ने पूछा "जो शख्स नुबूव्वत का दावा करता है क्या उसकी क़ौम का काई आदमी यहां है? लोगों ने कहा कि 'हाँ', इसलिए वह लोग मुझको और मेरे चंद साथियों को हिरक़्ल के पास ले गए, हिरक़्ल ने पूछा कि उनका सबसे क़रीबी रिश्तेदार कौन है, अबू सुफियान ने कहा कि मैं हूँ, इसलिए अबू सुफ़ियान को हिरक़्ल के सामने बिठाया और उसके साथियों को उसके पीछे, फिर हिरक़्ल ने अनुवादक के माध्यम से कहा कि मुद्दई–ए–नुबूव्वत के बारे में हम कुछ इनसे पूछना चाहते हैं, अगर हमसे यह कोई ग़लत बात कहें तो तुम लोग उसको ज़ाहिर कर देना, अबू सुफियान का बयान है कि अगर हमको हमारा झूठ बोलना ज़ाहिर होने का अंदेशा न होता तो ज़रूर उस रोज़ बहुत सी बात लगा कर कहते।

अबू सुफियान और हिरक़्ल का मुकालमा (वार्तालाप)–

हिरक़्ल : उनका नसब (वंश) क्या है?

अबू सुफियान : वह हम में ऊँचे ख़ानदान के समझे जाते हैं।

हिरक़्ल : क्या जो बात वह कहते हैं उनसे पहले भी किसी ने कही है?

अबू सुफियान : नहीं

हिरक़्ल : उस ख़ानदान में कोई बादशाह गुज़रा है?

अबू सुफियान : नहीं

हिरक़्ल : क्या साहिबे असर (प्रभावशाली) लोगों ने उनका इत्तिबाअ (अनुसरण) किया है या कमज़ोर लोगों ने?

---

1. सही बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब किताबुन नबी इला किसरा व क़ैसर, ज़ादुल मआद 3/688

अबू सुफियान : कमज़ोर लोगों ने

हिरक़्ल : उनके पैरो बढ़ रहें हैं या घटते जाते हैं?

अबू सुफियान : बढ़ते जाते हैं

हिरक़्ल : क्या कोई उनके दीन में दाख़िल होने के बाद दीन को नापसंद करके फिर भी जाता है?

अबू सुफियान : नहीं

हिरक़्ल : क्या उनके इस दावे से पहले भी तुमने कभी उन पर झूठ का तजुर्बा किया है?

अबू सुफियान : नहीं।

हिरक़्ल : क्या वह अहद व क़रार की खिलाफ वर्ज़ी भी करते हैं?

अबू सुफियान : अभी तक तो नहीं की, लेकिन अब जो नया मुआहिदा–ए–सुलह है उसमें देखें वह अहद पर क़ायम रहते हैं या नहीं?

हिरक़्ल : तुम लोगों ने कभी उनसे जंग की?

अबू सुफियान : हाँ।

हिरक़्ल : जंग का नतीजा क्या रहा?

अबू सुफियान : जंग का पांसा हमारे और उनके दरमियान पलटता रहा है, कभी हम ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) आते हैं, कभी वह।

हिरक़्ल : वह क्या तालीम देते हैं?

अबू सुफियान : वह कहते हैं कि एक खुदा की इबादत करो, किसी और को खुदा का शरीक न बनाओ, नमाज़ पढ़ो, पाक दामनी इख़्तियार करो, सच बोलो, सिलह रहमी करो।

हिरक़्ल ने मुतरजिम (अनुवादक) से कहा कि उनसे कहो कि हमने तुमसे उनके नसब (खानदान) के बाबत पूछा तो तुमने बताया कि वह तुम में शरीफ नसब हैं। पैग़म्बर हमेशा अच्छे ही ख़ानदानों में पैदा होते हैं, मैंने तुमसे दरयाफ़्त किया क्या उस ख़ानदान में किसी और ने भी नुबूअत का दावा किया था, तो तुमने कहा कि नहीं, अगर उनसे पहले किसी ने यह दावा किया होता तो मैं कहता कि वह उसी की नक़ल कर रहे हैं, मैंने तुमसे पूछा कि क्या उनके ख़ानदान में कोई बादशाह गुज़रा है, तुमने कहा नहीं, अगर कोई बादशाह गुज़रा होता, तो मैं कहता कि अपने ख़ानदान की बादशाहत के तालिब हैं, मैंने दरयाफ़्त किया कि क्या तुम उनको इस दावे से पहले भी कभी झूठा कहते थे तुमने कहा नहीं, मैं जानता हूँ यह नामुमकिन था कि वह लोगों से तो झूठ ना बोलें और अल्लाह पर झूठ बांधें, मैंने तुमसे पूछा की शरीफ और बाअसर लोग उनके पैरो हैं या ग़रीब और कमज़ोर, तो तुमने कहा कि कमज़ोरों ने ही उनकी पैरवी की है, पैग़म्बरों के इब्तिदाई पैरो हमेशा ग़रीब ही लोग होते हैं, मैंने तुमसे दरयाफ़्त किया कि उनके पैरो बढ़ते जाते हैं या घटते जाते हैं, तुमने कहा कि बढ़ते जाते हैं, ईमान का यही मामला है कि बढ़ता जाता है यहां तक कि कमाल को पहुंच जाए। मैंने तुमसे पूछा कि कोई उनके दीन से नाराज़ हो कर मुरतद हो कर (विधर्मी) भी हो जाता है, तुमने कहा नहीं, ईमान का हाल यही होता है, जब दिलों को उसकी चाशनी हासिल हो जाती है तो वह निकलता नहीं है, मैंने तुमसे पूछा कि क्या वह अहद व पैमान की ख़िलाफ़ वर्ज़ी भी करते हैं तुमने कहा नहीं,

पैग़म्बर इसी तरह ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करते और मैंने तुमसे दरयाफ़्त किया कि वह क्या सिखाते हैं, तुमने बताया कि तुमको यह सिखाते हैं कि तुम अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो, और तुमको बुतों की पूजा से रोकते हैं, नमाज़, सच्चाई, पाकदामनी की तालीम देते हैं, अगर तुम्हारा कहना सच है तो अनक़रीब इस वक्त जहां मेरे क़दम हैं वहां तक उनका कब्ज़ा हो जायेगा, मुझको यह ज़रूर ख़्याल था कि एक पैग़म्बर आने वाला है लेकिन यह ख़्याल न था कि वह अरब में पैदा होगा, अगर मैं वहां जा सकता तो ज़रूर उनकी मुलाकात के लिए जाता, और अगर मैं उनके पास होता तो पांव धोता।

हिरक़्ल ने सलतनत के अरकान (सदस्यों) और क़ौम के सरदारों को महल में तलब किया और दरवाजे बन्द कर दिये, फिर हाज़िरीन, (मौजूद लोगों) की तरफ मुतवज्जेह हो कर उसने कहा "ऐ! अहले रोम क्या तुम नेकी और कामयाबी चाहते हो? और चाहते हो कि तुम्हारा मुल्क़ बाक़ी रहे? अगर ऐसा है तो तुम उस नबी के हाथ पर ईमान ले आओ, हाज़िरीन तेज़ी से दरवाज़ों की तरफ भागे तो उनको बन्द पाया, जब हिरक़्ल ने उनकी नाराज़गी देखी और उनके ईमान लाने से मायूस हो गया तो उसने हुक्म दिया कि इनको वापस लाओ और कहा कि मैंने अभी जो बात कही थी वह इसलिए कही कि अपने दीन पर तुम्हारी मज़बूती का इम्तिहान लूँ मैंने यह देख लिया तो सबने उसके सामने पेशानी (माथा) टेक दी और उससे खुश हो गए[1] लेकिन मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल में है कि हिरक़्ल ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़त लिखा कि मैं मुसलमान हूँ तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि यह ग़लत कहते हैं, वह तो अपनी नसरानियत पर काएम हैं, इसके अलावा ग़जव–ए–मूता में ख़ुद हिरक़्ल ने मुसलमानों का मुक़ाबिला किया।

1. सही बुख़ारी, अस्सीरतुन नबविया, इमाम ज़हबी 2/502–505

❖❖❖

बातें इब्राहीम अलै0 की .....

की क़ौम के विषय में हमसे झगड़ने लगा। निःसन्देह इब्राहीम बड़ा ही सहनशील, कोमल हृदय, हमारी ओर रुजू होने वाला था। "ऐ इब्राहीम! इसे छोड़ दो। तुम्हारे रब का आदेश आ चुका है और निश्चय ही उनपर न टलने वाली यातना आने वाली है।" (11:69–76)

जब उससे उसके रब ने कहा "मुस्लिम हो जा" उसने कहा "मैं सारे संसार के रब का मुस्लिम हो गया।" और इसी की वसीयत इब्राहीम ने अपने बेटों को की और याक़ूब ने भी (अपनी संतान को की) कि "ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए यही दीन चुना है, तो इस्लाम के अतिरिक्त किसी और दशा में तुम्हारी मृत्यु न हो।"

(2'131–132)

नोटः कुर्बानी की ईद और हज के महीने की मुनासिबत से यह जिक्र लाया गया।

❖❖❖

काबतुल्लाह के मुक़द्दस गोशे

—प्रस्तुतिः तसनीम फ़ातिमा

मुल्तज़मः हजरे असवद के करीब और बाब—ए—काबः के क़रीब तरीन जगह का नाम मुल्तज़म है। यहाँ खुसूसी तौर पर दुआ कबूल होती है। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूल—ए—करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह की क़सम खा कर इरशाद फ़रमाया "जब भी मुल्तज़म के पास दुआ की तो वह ज़रूर कबूल हुई।"

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस मुक़ाम पर अपने दोनों हाथ इस तरह रखते कि लगता था कि इससे लिपट गये हों और फिर बिलक—बिलक कर दुआयें फरमाते थे।

हतीम : बाब—ए—काबा की ओर के आख़री कोने पर रुक्न—ए—इराक़ी और दूसरे कोने पर रुक्न—ए—शामी है। इन दोनों कोनों के दरमियान हतीम का इलाक़ा है जो हेलाली (गोल) शक्ल में बना हुआ है। हतीम की दोनों दिशाएं यानी रुक्न—ए—इराक़ी और रुक्न—ए—शामी का इस्तलाम या बोसा नहीं लिया जाता, क्योंकि यह दोनों अरकान बुनियाद—ए— इब्राहीमी से हट कर बनाये गये हैं। हतीम की असल शरई हद 6 गज़ है, मगर इस वक्त कुछ ज़्यादा है।

मीज़ाब-ए-रहमत : अगर हम हतीम में खड़े हों तो हमारे सरों पर मीज़ाबे रहमत होगा। यह खान—ए—काबा की छत में नस्ब परनाले (पानी गिरने की ढाल) का नाम है। दौरे क़दीम में खान—ए—काबा पर छत नहीं थी। उस वक्त जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्र मुबारक 35 बरस हुई तो कुरैशे मक्का ने इसकी तामीर का फैसला किया और यह भी अहद किया कि इसकी तामीर में सिर्फ हलाल कमाई लगाई जाएगी। लूट, मार, ग़बन, चोरी—चकारी ग़रज़ हर क़िस्म की नाजाएज़ दौलत के इस्तेमाल से परहेज़ किया जाएगा।

मुक़ाम इब्राहीम : खान—ए—काबा के मताफ (तवाफ करने वाली जगह) एक जंगला (जाली) बना हुआ है। इसमें महफूज़ एक पत्थर का नाम मुकामे इब्राहीम है जिसके बारे में मुतअद्द (तरह—तरह) की रिवायात आयी हैं कि इस पर खड़े हो कर हज़रत इब्राहीम अ0 ने काबतुल्लाह की तअ़मीर की थी। तअ़मीरी मरहलों (बनाते समय) के दौरान यह पत्थर नरम पड़ जाता था और ज़रूरत के तहत ऊपर नीचे बुलन्द व पस्त हो कर घटता और बढ़ भी जाता था।

इसकी इसी नरमी वाली कैफियत की बिना पर हज़रत इब्राहीम अ0 के क़दमों के निशान इस पर सब्त (छप) हो गये और आज हजारों साल गुज़र जाने के बावजूद मौसमी और बैरूनी तग़य्युरात इस पर हावी न हो सके और अपने नुकूश के साथ जूँ का तूँ मौजूद है जो एक मोजज़ः है इस मुबारक पत्थर का ज़िक्र कुर्आन हकीम में भी आया है।

"जिसमें खुली खुली निशानियाँ हैं, वह मुक़ाम—ए—इब्राहीम है"।

(सूर—ए— आल इमरानः 97)

❖❖❖

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

–हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

कुरआन मजीद का समापन और उसका समारोह–

दूसरी रस्म कुरआन मजीद के समापन की है अर्थात जब बच्चा कुरआन मजीद खत्म कर लेता है, तो फिर एक छोटा सा समारोह किया जाता है और मिठाई अथवा शरबत से उपस्थित जनों का सत्कार किया जाता है। इस अवसर पर कहीं कहीं गुरु को जोड़ा (कुर्ता, पाइजामा, टोपी आदि) पुरस्कार के रूप में दिया जाता है। इस समारोह को "नशरह" भी कहते हैं।

शुद्धता एवं पवित्रता की शिक्षा-दीक्षा-

बच्चा जब कुछ बड़ा और समझदार हो जाता है और उसकी बुद्धि प्रखर होने लगती है अथवा उसमें समझने बूझने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है तो उसको 'तहारत' लेने की शिक्षा दी जाती है अर्थात् मल–मूत्र के बाद पानी द्वारा पवित्रता हासिल करना। अपवित्र वस्तुओं से बचने और शरीर तथा वस्त्रों को अपवित्र वस्तुओं से बचाने के निर्देश दिये जाते हैं। स्पष्ट है कि बच्चा पूर्ण रूप से सावधनी नहीं बरत सकता और उसमें वातावरण, शिक्षण–प्रशिक्षण और पारिवारिक व्यवसाय का बहुत कुछ हाथ होता है, परन्तु फिर भी धार्मिक विचार धारा के माता–पिता क्षमतानुसार इसका उचित प्रबन्ध करते हैं।

नमाज़ की शिक्षा-दीक्षा तथा प्रशिक्षण-

इस अवस्था में बच्चे को वुजू करना भी सिखा दिया जाता है और नमाज़ का भी शौक दिलाया जाता है। पिता या परिवार के बड़े बूढ़े प्रायः बच्चे को अपने साथ मस्जिद ले जाते हैं और वह अपने बड़ों तथा मुहल्ले वालों के साथ खड़ा हो कर नमाज़ की प्रक्रिया का अनुकरण करने लगता है। हदीस शरीफ़[1] में आता है, बच्चा जब सात वर्ष का हो जाय तो नमाज़ पढ़ने का निर्देश दिया जाय और जब दस वर्ष का हो तो आग्रह और नमाज़ न पढ़ने पर तंबीह की जाय अर्थात थोड़ा दण्ड दिया जाय।

इस्लामी शिष्टाचार तथा सामाजिक आचार-व्यवहार का शिक्षण प्रशिक्षण-

इसी आयु में धार्मिक माँ बाप और पढ़ी लिखी मातायें बच्चे को इस्लामी शिष्टाचार की शिक्षा देती हैं यथ–सब अच्छे कार्य (भोजन करना, पानी पीना, हाथ मिलाना आदि) दाहिने हाथ से किये जायें और शौच आदि कार्यों में बायाँ हाथ प्रयोग किया जाए। पानी बैठ कर और जहाँ तक सम्भव हो तीन सांसों में पिया जाय, बड़ों को सलाम किया जाय,

---

1. हर वह प्रक्रिया जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वयं की हो या मौखिक रूप से आदेश दिया, उनको लिखित रूप में एकत्र कर लिया गया है। इन लिखित वाक्यों को 'हदीस' कहते हैं। (अनुवाद)

छींक आने पर "अलहम्दु लिल्लाह" (अल्लाह का शुक्र है) कहा जाय, भोजन 'बिस्मिल्लाह' कर कर आरम्भ किया जाय और "हम्द व शुक्र" पर समाप्त किया जाये। इसी आयु में उस को कुरआन मजीद की छोटी–छोटी सूरतें और दैनिक कार्यों से सम्बन्धित दुआयें आदि याद करा दी जाती हैं। खुदा के पैग़म्बरों तथा नेक बन्दों के जीवन चरित्र से सम्बन्धित अनेक महत्वपूर्ण घटनाएं सुनाई जाती हैं, जिनसे उनके विश्वासों में शुद्धता एवं परिपक्वता विद्यमान हो, विचार शुद्ध एवं स्वच्छ बनें, और वह उन्हें अपने लिए आदर्श–पात्र समझने लगें।

रोज़ा कुशाई का आयोजन–

यों तो रोज़ा रखना मुसलमान पर बालिग़[1] हाने के बाद फ़र्ज[2] होता है, लेकिन सामान्यता मुसलमान बच्चे उल्लासपूर्ण अपने घर के वातावरण से प्रभावित हो कर छोटी आयु से ही रोज़ा रखना आरम्भ कर देते हैं। कुछ तो छुप कर रोजा रख लेते हैं और अधिकांश माता–पिता ग्यारह–बारह वर्ष की आयु में रोजा रखाते हैं। उस दिन खुशी में सगे सम्बन्धियों, मित्रों तथा बालक के हमजोलियों तथा उसके दोस्तों को आमान्त्रित करते हैं। उस दिन इफ़तारी[3] में विशेष भोज्य पदार्थों का प्रबन्ध किया जाता है और विभिन्न प्रकार की वस्तुयें तैयार की जाती हैं। साधारण अवस्था के लोग भी उस दिन कुछ न कुछ विशेष आयोजन करते हैं। इसका नाम "रोज़ा कुशाई" है। प्रगतिशीलता एवं सांस्कृतिक विकास के साथ–साथ इसमें कृत्रिमता आती गई और इसने भी अनेक क्षेत्रों में एक अच्छे खासे समारोह और छोटी मोटी 'दावत वलीमा'[4] का रूप धारण कर लिया।

बालिग़ होते ही लड़के एवं लड़की पर नमाज़, रोज़ा और विशिष्ट शर्तों के साथ (जिनका उल्लेख मसअले, मसायल की किताबों में देखा जा सकता है) ज़कात और हज फ़र्ज हो जाते हैं, और इनके छोड़ने पर वह गुनहगार ठहरता है। अब हलाल, हराम, अज़ाब सवाब का, नियम उस पर लागू हो जाता है, और वह एक ज़िम्मेदार, समझदार और एक प्रौढ़ व्यक्ति की भांति अपने कर्मों का, लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के प्रति उत्तरदयी हो जाता है।

---

1. बालिग़ होने के लिए 15 वर्ष की आयु यथेष्ट समझी जाती है। (अनुवाद)
2. नितान्त अनिवार्य (अनुवाद)
3. दिन भर रोज़ा रखने के बाद सूर्यास्त के पश्चात जिन वस्तुओं का सेवन किया जाता है, उस खान–पान को "इफ़तारी" कहते हैं। (अनुवाद)
4. विवाह होने के बाद पत्नी से भेंट करने के बाद दूसरे दिन विवाह के सम्मान में भोज का आयोजन किया जाता है उसे दावत वलीमा कहते हैं।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी.....

ने कहा या रसूलुल्लाह मुझे हज़रत आइशा रज़ि0 ने बातों में लगा लिया यहां तक कि सुबह रौशन हो गयी लेकिन फिर भी आपने तशरीफ लाने में देरे की आपने फरमाया मैं फज्र की सुन्नतें पढ़ रहा था। हज़रत बिलाल रज़ि0 ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लह आपने बिल्कुल सुबह कर दी, फरमाया इससे भी ज़्यादा देर हो जाती तब भी मैं इन दो रकअ़तों को बहुत ही खूबी के साथ पढ़ता। (अबूदाऊद)

❖❖❖

(संग्रहीत)

आलम-ए-इस्लाम (इस्लाम जगत)

—जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

तुर्क एयर लाइन पर दीनी व इस्लामी असर गालिब—

दीन—ए—इस्लाम ने औरतों को उनका मक़ाम अता किया है, और समाज में उसकी हैसियत बहाल की है, इस्लाम के आने से पहले औरतों की यह हैसियत नहीं थी उनको उनके हुकूक़ नहीं मिल रहे थे आज का माद्दी दौर भी जाहिलियत की तक़लीद में उसकी हदों को फांद कर कहीं और जाना चाहता है बल्कि सही बात तो यह है कि उसने जाहिलियत को भी बहुत पीछे छोड़ दिया है।

इस्लामी तालीम में औरतों की इज्ज़त हर शक्ल में क़ायम है और कहीं भी उनको रुस्वाई व ज़िल्लत नहीं है और सिर्फ एक खिलौने और सामान—ए—तसल्ली की हैसियत से नहीं रखा गया है, बल्कि तालीम दी गयी है कि औरतों के साथ हुस्ने सुलूक करो और उसको सवाब का अमल बताया गया है।

आज दुनिया के पैमाने ही कुछ और हो गये हैं हर तरफ औरतों की बराबरी और मसावात की आवाज़ बुलन्द की जा रही है मगर कोई उनको बराबरी का दर्जा देने को तैयार नहीं। अगर उनसे काम भी लिया जाता है तो सिर्फ और सिर्फ तफ़रीह व तसल्ली का और उनकी ज़िल्लत व रुस्वाई का।

पर्दा एक ऐसी नेअ़मत है जिसके साथ औरत महफूज़ रहती है और गैरों की हवसनाक निगाहें उनके ऊपर नहीं पड़तीं इसका इंतिज़ाम करना हुकूमतों का काम है और तरगीब देकर उनकी हिफाज़त करना भी सत्ताधारियों के अधिकार में है चुनांचे तुर्की हुकूमत ने इस सिम्त में सही क़दम उठाया है, एक खबर के मुताबिक़ तुर्की की हुकूमत टरश एयरलाइन पर काम करने वाली तमाम एयर होस्टेस औरतों को एक नए क़ानून के तहत इस बात का पाबन्द कर दिया गया है कि वह काम के वक्तों में लाल रंग की लिपइस्टिक इस्तेमाल करने से बचें, इस नये क़ानून को मुल्क़ की सेकूलर जमाअतों ने मुल्क के सेकुलरिज़्म की रूह के खिलाफ़ क़रार देते हुए उसको इस्लामाइजेशन की तरफ हुकूमत के बढ़ते हुए क़दमों से अवाम को सचेत कर दिया है और कहा है कि इस समय के पी.एम. रज्जब तय्यब अरदगान मुल्क को धीरे—धीरे मुसलमान बनाने की कोशिश कर रहे हैं। स्पष्ट रहे कि इससे पहले भी टर्किश एयर लाइन में काम करने वाली एयर होस्टेस ख़्वातीन के उस ड्रेस को तबदील कर दिया गया जो पूरे तौर पर गैर इस्लामी और गैर अख़्लाक़ी था उसकी जगह लाल रूमी टोपी से मिलता जुलता कैप जो खिलाफते उस्मानिया के दौर

शेष पृष्ठ..... 19 पर

(उर्दू तफ़सीरों से)

क़िस्सा ज़बीहुल्लाह का

—अफ़ीफा सिद्दीक़ा आलिमा

व क़ाल इन्नी ज़ाहिबुन इला रब्बी "और इब्राहीम अ0 कहने लगे कि मैं तो अपने रब की तरफ़ चला जाता हूँ" (साफ़्फ़ात:99) यह बात हज़रत इब्राहीम अ0 ने उस वक़्त इरशाद फ़रमाई जब कि आप अपने अहले वतन से बिलकुल मायूस हो गये, और वहां आप के भतीजे हज़रत लूत अ0 के सिवा कोई आप पर ईमान नहीं लाया, रब की तरफ चले जाने से मुराद यह है कि मैं दारुल कुफ़्र को छोड़ कर किसी ऐसी जगह चला जाऊँगा जहां का मुझे अपने रब की तरफ से हुक्म हुआ है, और जहां मैं अपने परवरदिगार की इबादत कर सकूंगा। चुनांचि आप अपनी ज़ौजए मुतह्हरा हज़रत सारा रज़ि0 और अपने भतीजे लूत अ0 को लेकर सफ़र पर रवाना हुए, और इराक़ के मुखतलिफ़ हिस्सों से होते हुए बिल आख़िर शाम तशरीफ़ ले आये, इस तमाम अर्से में हज़रत इब्राहीम अ0 के कोई औलाद नहीं हुई थी, इसलिए आपने वह दुआ फ़रमाई जिसका अगली आयत में ज़िक्र है, यानी "ऐ मेरे परवरदिगार! मुझे एक नेक फ़रज़न्द अता फरमा" चुनांचि आपकी यह दुआ कबूल हुई, और अल्लाह तआला ने आपको एक फ़रज़न्द की पैदाइश की खुशखबरी सुनाई "पस हमने उनको एक हलीमुल मिज़ाज फ़रज़न्द की बशारत दी" हलीमुल मिज़ाज (धैर्यवान) फरमा कर इशारा कर दिया गया कि यह नोमौलूद अपनी ज़िन्दगी में ऐसे सब्र वह ज़ब्त और बुर्दबारी का मुज़ाहरा करेगा कि दुनिया उसकी मिसाल नहीं पेश कर सकती, इस फ़रज़न्द की विलादत का वाकिआ यह हुआ कि जब हज़रत सारा रज़ि0 ने यह देखा कि मुझ से कोई औलाद नहीं हो रही है तो वह समझीं कि मैं बाँझ हो चुकी हूँ उधर फ़िऔंने मिस्र ने हज़रत सारा को अपनी बाँदी जिसका नाम हाजरा रज़ि0 था अक्सर ने बांदी कहा है, ख़िदमत गुज़ारी के लिए दे दी थी। हज़रत सारा रज़ि0 ने यही हाजरा रज़ि0 हज़रत इब्राहीम अ0 को अता कर दीं, और हज़रत इब्राहीम अ0 ने उनसे निकाह कर लिया, उन्हीं हाजरा रज़ि0 के बत्न से यह साहबज़ादे पैदा हुए और उनका नाम इस्माईल अ0 रखा गया, "सो जब वह फ़रज़न्द ऐसी उम्र को पहुंचा कि इब्राहीम अ0 के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम अ0 ने फ़रमाया "बरख़ुरदार (बेटे) मैं ख़्वाब में देखता हूं कि मैं तुमको ज़ब्ह कर रहा हूँ" बाज़ रिवायत से मालूम होता है कि यह ख़्वाब हज़रत इब्राहीम अ0 को तीन रोज़ मुतवातिर दिखाया गया (क़ुर्तुबी) और यह बात तै शुदाह है कि अम्बिया अ0 का ख़्वाब "वह्य" (अल्लाह की बात) होता है,

इसलिए इस ख़्वाब का मतलब यह था कि अल्लाह तआला की तरफ़ से हज़रत इब्राहीम अ0 को हुक्म हुआ है कि अपने एकलौते बेटे को ज़ब्ह कर दें, यूं यह हुक्म किसी फरिश्ते वगैरह के ज़रीए भी नाज़िल किया जा सकता था, लेकिन ख़्वाब में दिखाने की हिकमत बज़ाहिर यह थी कि हज़रत इब्राहीम अ0 की इताअ़त शिआरी अपने कमाल के साथ ज़ाहिर हो, ख़्वाब के ज़रिए हुए हुक्म में इन्सानी नफ़्स के लिए तावीलात की बड़ी गुन्जाइश थी, लेकिन हज़रत इब्राहीम अ0 ने तावीलात का रास्ता इख्तियार करने के बजाये अल्लाह के हुक्म के आगे सरे तसलीम ख़ाम कर दिया (तफ़्सीरे कबीर) इसके अलावा यहां बारी तआला का अस्ल मक़सद हज़रत इस्माईल अ0 को ज़ब्ह कराना था, न हज़रत इब्राहीम अ0 को यह हुक्म देना कि उन्हें ज़ब्ह कर ही डालो, बल्कि मनशा यह हुक्म देना था कि अपनी तरफ़ से उनहें ज़ब्ह करने के सारे सामान करके उनके ज़ब्ह का इक़दाम कर गुज़रो, अब यह हुक्म अगर ज़बानी होता तो उसमें आज़माइश न होती, इसलिए उन्हें ख़्वाब में दिखलाया कि वह बेटे को ज़ब्ह कर रहे हैं, इससे हज़रत इब्राहीम अ0 यह समझे कि ज़ब्ह का हुक्म हुआ है और पूरी तरह ज़ब्ह करने पर आमादा हो गये, इस तरह आज़माइश भी पूरी हो गई, और ख़्वाब भी सच्चा हो गया, यह बात ज़बानी हुक्म के ज़रिए आती तो या आज़माइश न होती या हुक्म को बाद में मनसूख करना पड़ता। अर्मानों से मांगे हुए बेटे को कुर्बान करने का हुक्म उस वक़्त दिया गया था जब यह बेटा अपने बाप के साथ चलने फिरने के क़ाबिल हो गया था, और परवरिश की मशक़्कतें बरदाश्त करने के बाद अब वक़्त आ गया था कि वह कुव्वते बाजू बन कर बाप का सहारा साबित हो, मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि उस वक़्त हज़रत इस्माईल अ0 की उम्र 13 साल थी, और बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया कि बालिग़ हो चुके थे (तफ़्सीरे मज़हरी)। हज़रत इब्राहीम अ0 ने बेटे से कहा "सो तुम भी सोच लो कि तुम्हारी क्या राय है?" हज़रत इब्राहीम अ0 ने यह बात हज़रत इस्माईल अ0 से इसलिए नहीं पूछीं की वह हां करेंगे तो अमल होगा, आप तो हुक्मे इलाही की इताअत के लिए हर वक़्त तैयार रहते हैं, लेकिन इताअत के लिए हमेशा रास्ता वह इख़्तियार करते हैं जो हिकमत और हत्तल मक़दूर सुहूलत पर मबनी हो, अगर हज़रत इब्राहीम अ0 पहले से कुछ कहे बगैर बेटे को ज़ब्ह करने लगते, तो यह दोनों के लिए मुश्किल का सबब होता, अब यह बात आपने मशवरे के अन्दाज़ में बेटे से इसलिए ज़िक्र की कि बेटे को पहले से अल्लाह का यह हुक्म मालूम हो जायेगा तो वह ज़ब्ह होने की अज़िय्यत को सहने के लिए पहले से तैयार हो सकेगा नेज़ अगर बेटे के दिल में कोई तज़बज़ुब हुआ भी तो उसे समझाया जा सकेगा (रुहुल मआनी व बयानुल कुर्आन) लेकिन वह

बेटा भी अल्लाह के ख़लील अ0 का बेटा था और उसे खुद मनसबे रिसालत पर फ़ाइज़ होना था, उसने जवाब में कहा "अब्बा जान जिस बात का आपको हुक्म दिया गया है उसे कर गुज़रिए" इससे हज़रत इस्माईल अ0 के बेमिसाल ज़ज़्बे–ए–जां सिपासी की तो शहादत मिलती ही है, इसके अलावा यह भी मालूम होता है कि इस कमसिनी ही में अल्लाह ने उन्हें कैसी ज़िहानत और कैसा इल्म अता फ़रमाया था, हज़रत इब्राहीम अ0 ने उनके सामने अल्लाह के किसी हुक्म का हवाला नहीं दिया था, बल्कि महेज़ एक ख़्वाब का तज़किरा फ़रमाया था, लेकिन हज़रत इस्माईल अ0 समझ गये, कि अम्बिया अ0 का ख़्वाब "वह्य" होता है, और यह ख़्वाब भी दर हक़ीकत हुक्मे इलाही की ही एक शक्ल है, चुनांचि उन्होंने जवाब में ख़्वाब के बजाये हुक्मे इलाही का तज़किरा फ़रमाया।

बाज़ तारीख़ी व तफ़सीरी रिवायात से मालूम होता है कि शैतान ने रास्ते में तीन मरतबा हज़रत इब्राहीम अ0 को बहकाने की कोशिश की हर बार हज़रत इब्राहीम अ0 ने उसे सात कनकरियां मार कर भगा दिया, आज तक मिना के तीन जमरात पर इसी महबूब अमल की यादगार कनकरियां मार कर मनाई जाती है, बिल आख़िर जब दोनों बाप बेटे यह अनोखी इबादत अनजाम देने के लिए कुर्बान गाह तक पहुंचे तो हज़रत इस्माईल अ0 ने अपने वालिद से कहा कि अब्बा जान! मुझे ख़ूब अच्छी तरह बाँध दीजिए, ताकि मैं ज़्यादा तड़प न सकूं, और अपने कपड़ों को भी मुझ से बचाइये, ऐसा न हो कि उन पर ख़ून की छीटें पड़ें, तो मेरा सवाब घट जाये, इसके अलावा मेरी वालिदा ख़ून देखेंगी तो उन्हें ग़म ज़्यादा होगा। और अपनी छुरी भी तेज़ कर लीजिए, और उसे मेरे हल्क़ पे ज़रा जल्दी–जल्दी फेरिएगा, ताकि आसानी से मेरा दम निकल सके, क्योंकि मौत बड़ी सख़्त चीज़ है, और जब आप मेरी वालिदा के पास जाएं तो उनसे मेरा सलाम कह दीजिएगा, और आप मेरी कमीज़ वालिदा के पास ले जाना चाहें तो ले जाएं, शायद इससे उन्हें कुछ तसल्ली हो, एकलौते बेटे की ज़बान से यह अलफ़ाज़ सुन कर एक बाप के दिल पर क्या गुज़र सकती है? लेकिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम इस्तेक़ामत के पहाड़ बन कर जवाब देते हैं कि बेट! मेरे कितने अच्छे मददगार हो, यह कह कर उन्होंने बेटे को बोसा दिया, पुरनम आँखों से उन्हें बाँधा (मजहरी) और उन्हें पेशानी के बल लिटा दिया" तारीख़ी रिवायात में इस तरह लिटाने की वजह यह बयान की है कि शुरुअ में हज़रत इब्राहीम अ0 ने उन्हें सीधा लिटाया था, लेकिन जब छुरी चलाने लगे तो बार–बार चलाने के बावजूद गला कटता नहीं था, क्योंकि अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से पीतल का एक टुकड़ा बीच में हाएल कर दिया था, या छुरी को न काटने का हुक्म हो गया था, इस मौक़े पर बेटे ने खुद यह फ़रमाइश की कि अब्बा

जान 'मुझे चेहरे के बल करवट से लिटा दीजिए, इसलिए कि आपको मेरा चेहरा नज़र आता है तो शफ़क़ते पिदरी जोश मारने लगती है, और गला पूरी तरह कट नहीं पाता, इसके अलावा छुरी मुझे नज़र आती है तो मुझे भी घबराहट होने लगती है, चुनांचि हज़रत इब्राहीम अ0 ने उन्हें उसी तरह लिटा कर छुरी चलानी शुरु की (तफ़सीर मज़हरी वगैरह) वल्लाहु आलम, "और हमने उन्हें आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! तुमने अपने ख़्वाब को सच कर दिखाया" यानी अल्लाह के हुक्म की तामील में जो काम तुम्हारे करने का था उसमें तुमने अपनी तरफ़ से कोई कसर उठा नहीं रखी। (ख़्वाब में भी ग़ालिबन सिर्फ़ यही दिखाया गया था कि हज़रत इब्राहीम अ0 उन्हें ज़ब्ह करने के लिए छुरी चला रहे हैं) अब यह आज़माइश पूरी हो चुकी इसलिए अब इन्हें छोड़ दो, "हम मुख़लिसीन को ऐसा ही सिला दिया करते हैं" यानी जब कोई अल्लाह का बन्दा अल्लाह के हुक्म के आगे सरे तस्लीम ख़म करके अपने तमाम जज़बात को कुर्बान करने पर आमादा हो जाता है, तो हम बिल आख़िर दुनियावी तकलीफ़ से भी बचा लेते हैं, और आख़िरत का अज्र व सवाब भी उसके नाम–ए–आमाल में लिख देते हैं, और हमने एक बड़ा ज़बीहा उसके एवज़ में दिया," रिवायात में है कि हज़रत इब्राहीम अ0 ने यह आसमानी आवाज़ सुन कर ऊपर की तरफ़ देखा तो हज़रत जिब्राईल अ0 एक मेंढा लिये खड़े थे। बहर हाल यह जन्नती मेंढ़ा हज़रत इब्राहीम अ0 को अता हुआ, और उन्होंने अल्लाह के हुक्म से अपने बेटे के बजाये उसको कुर्बान किया, इस ज़बीहे को "अ़जीम इसलिए कहा गया कि यह अल्लाह की तरफ़ से आया था और उसकी कुर्बानी के मक़बूल होने में किसी को कोई शक नहीं हो सकता, (तफ़सीर मज़हरी वगैरह) बाज़ तफ़सीरों में लिखा है कि हज़रत इब्राहीम अ0 ने अपनी समझ में छुरी चलाकर ज़ब्ह कर दिया लेकिन जब अपनी आँख की पट्टी खोली तो देखा जन्नती मेंढा ज़ब्ह हुआ है और हज़रत इस्माइल अ0 अलग खड़े हैं। (कशफर्रहमान)

❖❖❖

आलमे इस्लाम .....

की एक वाजेह अलामत समझी जाती है और एक लंबी गाउन को उनका ड्रेस क़रार दे दिया गया। तथा एयरलाईन पर सफर के दौरान शराब पर पाबन्दी लगा दी गयी। इसमें कोई शक नहीं कि मौजूदा हुकूमत मुल्क से लादीनियत को उखाड़ फेंकना चाहती है तथा इस बात की कोशिश कर रही है कि धीरे–धीरे तुर्की की इस्लामी पहचान को दोबारा रौशन किया जाय, हुकूमत की इस कोशिश में अवाम खासतौर पर औरतों का एक बड़ा तब्क़ा हुकूमत के साथ है। मुल्क में इस्लामी पर्दे के इस्तेमाल में बढ़ती हुई रुचि और मसाजिद में नमाज़ियों की कसरत तथा शोब–ए–हिफ्ज़ कुर्आन मजीद की तादाद में बेपनाह इज़ाफ़ा इस बात की खुली अलामत है।

❖❖❖

—देवनागरी लिपि में उर्दू

मारक-ए-ईमान व माद्दीयत (ईमान और भौतिकता की लड़ाई)

—मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 —लिपिः मो0 मुहम्मदुल हसनी रह0

सूर-ए-कह्फ़ ईमान और माद्दीयत की कशमकश की कहानी है–

सूर–ए–कह्फ़ दो नजरयात, दो अकीदों, और दो किस्म की नफ़्सीयात की कशमशक (खींचा तानी) की कहानी है, एक माद्दीयत और माद्दी चीजों पर अ़कीदा, दूसरे ईमान बिलग़ैब और ईमान बिल्लाह, इसमें उन अक़ाइद, आमाल व अख़लाक़ और नताइज़ व आ़सार की तशरीह़ की गई है जो उन दोनों क़िस्म की नफ्सीयात या नज़्रयात के नतीजे में ज़ाहिर होते हैं और उस अव्वलुज्ज़िक्र नज़रिये को इख़्तियार करने के खिलाफ आगाही दी गई है जो सिर्फ माद्दा और उसके मज़ाहिर पर यक़ीन रखता है और खुदा और ग़ैबी ताकतों का मुनकिर है।

अस्हाबे कह्फ़ का किस्सा–

अब उन चारों किस्सों की तरफ आइये, सब से पहले जो किस्सा हमारे सामने आता है वह अस्हाबे कह्फ़ और रक़ीम (खोह) का किस्सा है, यह अस्हाबे कह्फ़ कौन थे, इन्सानी तारीख में इस किस्से की क्या कीमत व इफादीयत है और कुर्आने मजीद नें खुसीसीयत व एहतिमाम के साथ इसका ज़िक्र क्यों किया है कि वह एक ज़िन्द–ए–जावेद कहानी बन गया और उसको तारीख़ के हर दौर में बराबर सुना और सुनाया जाता रहा।

मसीही लिट्रेचर और मज़हबी कहानियों में अस्हाबे कह्फ़ का तज़किरा–

इससे पहले कि हम इस किस्से को कुर्आने मजीद के मखसूस मोजिज़ाना उस्लूब, बा मक्सद व बा वक़ार अन्दाज़े कलाम और उस बलाग़ते कुर्आनी के आईने में देखें जो गैर ज़रूरी बातों और फुजूल बहसों से पाक और बालातर है हम पहले कदीम मज़हबी सहीफ़ों और उन रिवायती दास्तानों में उसका सुराग़ लगाते हैं, जो सीना ब सीना चली आ रही हैं, और जिसको एक नस्ल दूसरी नस्ल तक मुन्तक़िल करती आई है, उसके साथ हम उसका जाइजा लेंगे कि इस दास्तान और कुर्आने मजीद के बयान किये हुए वाकिये में कहाँ–कहाँ इशतिराक है और किस जगह इख़्तिलाफ।

अस्हाबे कह्फ़ का ज़िक्र अहदे अ़तीक के सहीफ़ों में नहीं है, इसलिए कि यह वाकिया ईसाई तारीख के आग़ाज़ में उस वक्त पेश आया जब तौहीद अपनाने और बुत परस्ती छोड़ने की दावत मसीह अ0 के मानने वालों के ज़रीये फैल चुकी थी और अहदे अतीक़ के आखिरी सहीफे भी मुरत्तब हो चुके थे, इस किस्से में कुदरती तौर पर (खास तौर पर इस वजह से कि इसमें हजरत मसीह के मानने वालों

की जवाँ मर्दी व इस्तिकामत पूरी तरह आयी है) कोई ऐसी चीज़ न थी जो यहूदियों को उसके हिफ़्ज़ व नक़्ल पर आमादा करती, अलबत्ता ईसाइयों के लिए यह बहुत महबूब व पसन्दीदा मजहबी किस्सों में था, इसकी वजह यह थी कि ब निस्बत और किस्सों के इसमें ज़्यादा हैरत अंगेज़ और पुरकशिश वाकिआ़त बयान किये गये थे, मज़ीद यह कि इस वाकिआ़ से मसीह़ अ0 के इब्तिदाई मानने वालों की मजबूती व इस्तिक़ामत, उनकी कूवते ईमानी और अक़ीदा व उसूल के लिए उनकी खुद शिकनी व कुर्बानी और मसीहीयत की अव्वलीन साफ व पाकीज़ा तालीमात की खातिर उनकी गैरत व हमीयत का बड़ा सुबूत मिलता था, और वह आज भी ईमान की दबी हुई चिंगारी को दोबारा फ़रोजाँ करने, सोई हुई ग़ैरते ईमानी को बेदार करने, मुज़ाहमत और मुकाबले की ताक़त पैदा करने और ज़िद्दो जुह़द व कुर्बानी के रास्ते पर डालने की कूवत व सलाहियत रखता है, यह अनासिर जो इस क़िस्से की इमतियाज़ी खुसूसियत हैं, तवील इन्सानी तारीख़ में उसके बकाए दवाम के ज़ामिन हैं और इसी वजह से उसको रूए ज़मीन के इतने बड़े रक्बे और इलाके में शुहरत व कबूलीयत हासिल हुई, और एक अहद से दूसरे अहद, और एक नस्ल से दूसरी नस्ल तक उसको बराबर मुन्तक़िल किया जाता रहा। अब हमें देखना चाहिए कि ज़मान–ए–साबिक़ के ईसाइयों ने उसको किस तरह समझा था, और बाद के आने वालों के लिए इस सिसिले की क्या मालूमात बहम पहुंचाई थी? इस सिलसिले में अख़लाक़ व मजाहिब के इन्साईकिलोपीडिया के मकाला निगार ने जो कुछ लिखा है, उसका माहसल (सारांश) हस्ब ज़ेल है।

सात सोने वालों का क़िस्सा मुक़द्दस हस्तियों के उन किस्सों में है जिसमें अक़्ल की तसल्ली व आसूदगी का सब से ज़्यादा सामान है, और जो अफ़ाके आलम में सब से ज़्यादा मशहूर है, किस्से के अनासिर जो कदीम तरीन किताबों में नज़र आते हैं हस्ब ज़ेल हैं–

"शहंशाह देसस (DECIUS) यूनान के कदीम शहर अफीसस (EPHESUS) में जा कर बुत परस्ती की रस्म की तजदीद (नवीनीकरण) करना चाहता है, और बाशिन्दगाने शहर खास तौर से ईसाइयों को बुतों पर कुर्बानी पेश करने का हुक्म देता है, उसके नतीजे में ईसाई ईसाइयत तर्क कर देते हैं, लेकिन एक तादाद अपने दीन पर मजबूती से काइम रहती है, और हुकूमत के मज़ालिम बरदाश्त करती है। इस मौके पर सात नौजवान (बाज रिवायत में उन की तादाद आठ बताई गई है) जो शाही महल में मुकीम थे, बादशाह के सामने आते हैं (उनके नामों मे इख़्तिलाफ है) उन पर इस का इल्जाम है कि वह खुफिया तौर पर ईसाइयत कबूल कर चुके हैं, यह नौजवान बुतों के लिए कुर्बानी से इन्कार करते हैं बादशाह उनको इस मौक़े पर एक मुद्दत की मोहलत देता है कि शायद वह राहे रास्त पर आजाएं और

नसरानीयत से तौबा कर लें, इसके बाद वह शहर से चला जाता है। इस मुद्दत में यह नौजवान शहर छोड़ देते हैं, और एक करीब के पहाड़ जिस का नाम (ANCHILU) है के एक ग़ार में जा कर छुप जाते हैं। उनमें एक जिसका असली नाम (DIOMEDES) था, लेकिन अपने को छुपाने के लिए उसने उस नाम को बदल कर (LAMBLICHUS) रख लिया था। फटे और मैले कपड़ों में शहर जाता है ताकि हालात का पता लगाए, और अपने साथ खाना भी लेता आए, उस पर कुछ ज़्यादा वक़्त नहीं गुजरता कि शाह देसस फिर शहर में वापस आ जाता है और हुक्म जारी करता है कि वह नौजवान उसकी ख़िदमत में हाजिर किये जाएं। (DIOMEDES) अपने साथियों को इस शाही हुक्म से आगाह करता है वह खाना खाते हैं और बड़े फ़िक्र व क़लक़ में पड़ जाते हैं उस के बाद अल्लाह तआला एक तवील और गहरी नींद उन पर मुसल्लत कर देता है, जब उन नौजवानों का पता नहीं लगता तो उनके वालिदैन को तलब किया जाता है वह उस फरार से अपनी बे तअल्लुकी जाहिर करते हैं और इससे इन्कार करते हैं कि उनका इस साज़िश में कोई हाथ है। वह बादशाह को यह बताते हैं कि वह (ANCHILUS) के पहाड़ में छुपे हुए हैं, बादशाह हुक्म देता है कि ग़ार का मुंह एक बड़े पत्थर से बन्द कर दिया जाए ताकि वह उसमें अपनी मौत मर जाएं और उसी गार में दफन रहें दो ईसाई जिनमें एक का नाम (THEOGORE) और दूसरे का (RUFINUS) था उन शहीद नौजवानों का किस्सा जस्ते की एक तख़्ती पर लिख कर उस पत्थर के नीचे दबा देते हैं जिससे ग़ार का मुंह बन्द किया गया था।

तीन सौ सात साल के बाद शाह के क्षेत्र THEODOSIUS सानी के अहद में एक बगावत होती है जिसकी कियादत बाज ईसाई करते हैं। एक जमाअत जिसके रहनुमा पादरी थ्यूडर (THEODORE) हैं, हयात बादल मौत और हश्रे अजसाद का इनकार करते हैं, ईसाई बादशाह इस बात से खौफ ज़दा और फिक्रमन्द होता है, इस मौके पर अल्लाह तआला एक रईस जिसका नाम ADOLIUS है के दिल में डालता है कि वह अपनी बकरियों के गल्ले के लिए उस मैदान में एक बाड़ा तैयार करे जहाँ यह ग़ार वाके था, मेमार उसकी तामीर के लिए उस पत्थर का भी इस्तेमाल करते हैं, जिससे ग़ार का मुंह बन्द था, इस तरह यह गार खुल जाता है, उस वक्त अल्लाह तआला उन नौजवानों को बेदार कर देता है, उन के दिल में यह ख़याल गुज़रता है कि वह शायद सिर्फ एक रात सोये हैं, वह एक दूसरे को इसकी वसीयत करते हैं कि अगर ज़रूरत पड़े तो उन्हें देसस के हाथों शहादत क़बूल कर लेनी चाहिए। उनमें से एक मामूल के मुताबिक़ शहर जाता है और शहर के फाटक पर सलीब का निशान देख कर हैरतज़दा रह जाता है, यहां तक कि मजबूर हो कर एक

राहगीर से पूछता है कि क्या यह वाकई अफेसिस है? अपने साथियों को इस इन्क़िलाबे अजीम की ख़बर देने के लिए वह बेताब हो जाता है, लेकिन जज़्बात को काबू में रखते हुए ख़ाना खरीदता है और उसके बदले में वह सिक्का पेश करता है जो उसके पास था, यह वह सिक्का था जो देसिस के ज़माने में राइज़ था, दुकानदार समझता है कि इस नौजवान को शायद कोई ख़जाना मिल गया है वह और बाज़ार के और लोग उसमें अपना हिस्सा लगाना चाहते हैं, और नौजवान को डराते धमकाते हैं, और बीच शहर में खींचते हुए ले चलते हैं, एक मजमा उसके चारों तरफ लग जाता है। वह जवान चारों तरफ देखता है कि शायद कोई जाना पहचाना चेहरा नजर पड़ जाए। लेकिन कोई जानने वाला उसको नज़र नहीं आता हाकिम असकफ़ उससे हाल पूछता है तो वह सारा माजरा बयान कर देता है, और उसको इसकी दावत देता है कि वह उसके साथ उस पहाड़ तक चलें और उसके दूसरे साथियों से मुलाकात करें, यह लोग उस के साथ पहाड़ की चोटी पर जाते हैं वहां उनको सीसे की दो तख़्तियां मिलती हैं जिनसे नौजवान के बयान किये हुए वाकिए की तस्दीक हो जाती है, वह गार में दाखिल होते हैं और देखते हैं कि उसके साथी जो ज़िन्दा हैं नूर और सकीनत उनके चेहरों से ज़ाहिर है यह खबर बादशाह थियसस (THEODOSIUS) तक पहुंचती है वह भी गार की ज़ियारत के लिए आता है इस मौके पर MAIMILIAN या ACHILLIDES या कोई और नौजवान कहता है कि अल्लाह सुबहानहू तआला ने उन पर यह नीन्द इसलिए मुसल्लत कर दी और कियामत से पहले उनको बेदार इस लिए कर दिया ताकि हश्र व नश्र का सुबूत मिल जाए उसके बाद यह नौजवान खुद अपनी तबई मौत मरे और एक रूमी माबद उनकी यादगार के तौर वहां काइम कर दिया गया।

जहाँ तक इस किस्से की तारीखी अहमियत का तअल्लुक है बड़े–बड़े मुअर्रिख और किस्से कहानियाँ और तारीखी दास्तानों और रिवायतों के नाकिद भी इसकी सिहत के काइल हैं और उस को इम्कान से दूर नहीं समझते और उसकी वजह वह शुहरत और तवातुर और नस्ल दर नस्ल उसकी मुन्तकिली और उन तमाम कदीम किताबों में उसका ज़िक्र है जिनसे मसीही दुनिया भरी हुई है। गबन जिसका रुझान हमेशा इस किस्म के हैरत में डालने वाले वाकियात, और किस्से कहानियों की तरदीर व इन्कार की तरफ रहता है इस वाकिये के मुअल्लिक लिखता है:

"इस अजीब व गरीब किस्से को महज़ यूनानी रिवायात व खुराफात और उनके मज़हबी मुगालतों पर कयास नहीं किया जा सकता, इसलिए कि इस मफरुजः मुजिजा के पचास साल तक इसकी मुस्तनद व काबिले एतिमाद रिवायात का पूरा

तसलसुल काइम रहा, एक शामी पादरी ने जो थ्यूडेसस असगर के दो साल बाद पैदा हुआ था, और जिस का नाम JAMES OF SARUS था उसकी एक कहानी को (जो दो सौ तीस कहानियों में एक थी) अफेसस इन नौजवानों (अस्हाबेकहफ़) की मदह के लिए मख़सूस कर दिया था और इससे पहले कि छठी सदी मसीही का इख़्तिताम हो अस्हाबे कहफ़ का यह किस्सा शामी ज़बान से लातीनी में GREGOR OF TOURS की निगरानी में मुन्तकिल कर दिया गया। मसीही मशरिक़ में अशा रब्बानी के इजतिमाआत के मौक़े पर अस्हाबे कहफ़ की याद बड़े एहतिराम व अजमत के साथ मनाई जाती है उनके नाम रूमी त्योहारों और रूसी तक्वीम में गायत एहतिराम के साथ मुन्दर्ज थे और उनकी शोहरत सिर्फ ईसाई दुनिया तक महदूद न थी।

जहां तक उन सालों का तअल्लुक़ है जो उन्होंने उस ग़ार में गुज़ारे उनकी तादाद तीन सौ साल (जैसा कि मुफस्सिरीने इस्लाम ने मसीहियों से नक्ल किया है) और तीन सौ सात साल के दर्मियान है आखिर वाली बात (इन्साईक्लोपीडिया मज़ाहिब व अखलाक़) के मकाला निगार का है तीन सौ सात और तीन सौ नौ साल (जिसका ज़िक्र कुर्आने मजीद में है) के दर्मियान इस फर्क को मुंतकद्दमीन मुफस्सिरीने इस्लाम ने शमसी व क़मरी तक्वीम के इख़्तिलाफ पर महमूल किया है।

❖❖❖

कुर्आन की शिक्षा.....

मसलन हालत–ए–हैज़ में वती का मुर्तकिब हुआ और नापाकी यानी गुनाहों और वती हालत –ए–हैज़ और मौक़–ए– नजिस से परहेज़ करते हैं।

5. यहूद औरत की पुश्त की तरफ हो कर वती करने को मम्नूअ़ कहते थे और कहा करते थे कि उससे बच्चा अह्वल पैदा होता है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया तो उस पर यह आयत उतरी यानी तुम्हारी औरतें तुम्हारी लिए बमंजिलः खेती के हैं जिसमें नुतफ़ा बजाए–ए–तुख़्म और औलाद बमंजिलः पैदावार के है यानी उससे मक़सूद असली सिर्फ नस्ल का बाकी रखना और औलाद का पैदा होना है सो तुम को इख़्तियार है आगे से या करवट से या पशेपुश्त से पड़ कर या बैठ कर जिस तरह चाहो मुजामअ़त करो मगर यह ज़रूर है कि तुख़्म रेज़ी उसी खास मौकअ़ में हो जहाँ पैदावारी की उम्मीद हो। मुजामअ़त खास फर्ज ही में हो लिवातत हरगिज़ हरगिज़ न हो यहूद का ख़्याल गलत है कि इससे बच्चा अह्वल पैदा होता है।

6. यानी आमाल–ए–सालिहा अपने लिए करते रहो या यह कि वती से औलाद सालिहा मतलूब होनी चाहिए महज़ हज़्ज़–ए–नफ़्स मक़सूद न हो।

❖❖❖

मोमिन की पहचान

—फ़ौज़िया सिद्दीक़ा

अस्ल में मोमिन और मुस्लिम एक ही है: (लुग़त में शाब्दिक अर्थ) के लिहाज़ से मोमिन के माने ईमान वाले के और मुस्लिम के माने इताअ़त गुज़ार (आज्ञा कारी) के हैं लेकिन दीनी इस्तिहाह (परिभाषा) में जो मोमिन है वह मुस्लिम है और जो मुस्लिम है वह मोमिन है, और मोमिन या मुस्लिम वह है जो इस बात की गवाही देता है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और गवाही देता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ क़ाएम करता है यानी पाँचों वक़्त की नमाज़ अच्छे ढंग से अदा करता है और अपने माल की (अगर माल ज़कात के निसाब भर का है) सालाना ज़कात देता है और रमज़ान के रोज़े रखता है और इस्तिताअ़त होने पर ज़िनदगी में एक बार हज अदा करता है और ईमान रखता है अल्लाह पर जैसा कि वह अपने नामों और सिफ़तों के साथ है और ईमान रखता है फरिश्तों पर कि वह नूरानी मख़लूक है न खाते हैं न पीते हैं न सोते हैं न अल्लाह की नाफ़रमानी करते हैं उनको अल्लाह की तरफ़ से जो हुक्म होता है वही करते हैं और ईमान रखता है अल्लाह की उतारी हुई किताबों पर जो चार मशहूर हैं तौरेत, जुबूर, इंजील और कुर्आन मजीद पहली तीनों किताबें बदलाव के सबब, और आख़िरी किताब कुर्आन मजीद उतारे जाने के सबब मन्सूख़ (निरस्त) हो गईं और ईमान रखता है अल्लाह के रसूलों पर जिन की गिनती अल्लाह ही को मालूम है वह हर ज़माने में और हर क़ौम में भेजे गये लेकिन आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने के बाद यह सिलसिला ख़त्म हो गया और अब क़ियामत तक तमाम दुनिया के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही की नुबूव्वत रहेगी और ईमान रखता है क़ियामत के दिन पर इस तरह कि पहले सूर की आवाज़ पर सब कुछ मिट जायेगा फ़िर दूसरे सूर की आवाज़ पर सब ज़िन्दा हो जायेंगे हश्र का मैदान होगा हर एक का हिसाब व किताब होगा और आमाल के मुताबिक़ जन्नत या दोज़ख़ का फ़ैसला होगा। फ़िर मोमिन हमेंशा जन्नत में रहेंगे और मुन्किर हमेशा जहन्नम में जलेंगे और ईमान रखता है तक़्दीर पर अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही की तरफ़ से है इन सारी बातों को मानने वाला और उनके मुताबिक अमल करने वाला चाहे वह मर्द हो या औरत जिन हो या इन्सान मोमिन है, मुस्लिम है।

आला दर्जे का मोमिन वह है जो हर वक़्त अल्लाह को याद रखे जब वह इबादत के लिए खड़ा हो तो उसे ऐसा लगे कि वह अल्लाह

को देख रहा है और ऐसा नहीं हो सकता तो यह तों समझें ही कि अल्लाह उसे देख रहा है।

हर मोमिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल मानता है इसलिए वह दीन के हर काम में रसूल की पैरवी करेगा नमाज़ के लिए क्या क्या बातें ज़रूरी है और वह कैसे अदा की जाएं, ज़कात कितने माल पर फ़र्ज़ होती है, और कब फर्ज़ हाती है, किस को दी जाती है, रोज़ा किस तरह रखा जाता है, हज कब फर्ज़ होता है और कब अदा किया जाता है, और कैसे अदा किया जाता है यह सारे काम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सीखे बगैर नहीं अदा किये जा सकते इसी तरह जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मान लिया तो ज़िन्दगी के हर शोबे में आपकी रहनुमाई और पैरवी लाज़िम (अनिवार्य) हुई।

हलाल क्या है? हराम क्या है? हम रोज़ी कैसे कमाएं कौन सी रोज़ी हलाल व तय्यिब है और कौन सी हराम व नज़िस, हमको ज़िन्दगी में क्या–क्या करना है और किन किन चीज़ों से दूर रहना है हम निकाह किस से और कैसे करें? हम ग़मी और मौत में क्या करें इन सब बातों में हम को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रहनुमाई ले कर और उसी के मुताबिक अमल करना ज़रूरी होगा तभी हम मोकिन या मुस्लिम कहलाएंगे।

कुर्आन मजीद में मोमिनों और मुस्लिमों की सिफ़ात बहुत जगह बयान हुई हैं हम इस मज़मून में उनमें से कुछ बयान करके मोमिन की पहचान बताएंगे।

कुर्आन मजीद में जहां भी मोमिनों को मुख़ातब किया गया है उन में अकसर जगह तक़वा एख़्तियार करने को कहा गया है "ए ईमान वालो अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो यानी अल्लाह से डरो" इससे मालूम हुआ मोमिन की बड़ी पहचान अल्लाह का तक़्वा है और तक़्वा कहते है अल्लाह की पकड़ के डर से हर तरह के गुनाहों से बचते हुए ज़िन्दगी गुज़ारने को।

कुर्आन मजीद की सूरह अनफ़ाल की आयत नं0 2 और 3 हमारे सामने है। अनुवादः ईमान वाले वही है कि जब नाम आये अल्लाह का तो डर जायें उनके दिल और जब पढ़ा जाए उन पर उसका कलाम तो ज़्यादा हो जाता है उनका ईमान और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं। वह लोग जो कि क़ाएम रखते हैं नमाज़ को और हम ने जो उनको रोज़ी दी है उसमें से ख़र्च करते हैं।

इन दोनों आयतों में मोमिन की पहली सिफत यह बयान हुई है कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाए तो उनके दिल डर से सहेम जाते हैं मतलब यह कि अल्लाह तआला की अज़मत व महब्बत उनके दिल में रची व भरी हुई है जिस का एक तक़ाज़ा हैबत व ख़ौफ है कुर्आन मजीद की एक दूसरी आयत में उसका ज़िक्र करके अहले महब्बत को ख़ुश ख़बरी दी गई है "ख़ुशख़बरी दे दीजिए उन मुतवाज़े (विनीत) नर्म आदत वालों को

जिनके दिल डर जाते हैं जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाये'' (हजः 34–35)। और एक दूसरी आयत में फ़रमाया कि ''जान लो अल्लाह के ज़िक्र से दिल मुतमइन हो जाते हैं'' (रअ़दः 28)। इससे मालूम हुआ कि आयत में ज़िस ख़ौफ़ और हैबत का ज़िक्र है वह दिल के सुकून और इतमिनान के ख़िलाफ नहीं जैसे किसी दरिन्दे या दुश्मन का ख़ौफ़ दिल के सुकून को बरबाद कर देता है अल्लाह के ज़िक्र के साथ दिल में पैदा होने वाला ख़ौफ़ दरिन्दे के ख़ौफ़ से मुख़्तलिफ़ है। बाज़ मुफ़स्सिरीन ने फरमाया कि इस जगह अल्लाह के ज़िक्र और याद से मुराद यह है कि कोई शख़्स कोई गुनाह करने वाला था कि उसको खुदा की याद आ गई तो वह अल्लाह के अज़ाब से डर गया और गुनाह से रुक गया इस सूरत में ख़ौफ़ से मुराद अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ़ होगा।

मोमिन की दूसरी सिफ़त यह बतलाई कि जब उसके सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं तो उसका ईमान बढ़ जाता है। ईमान बढ़ने के माने जिन पर सबका इत्तिफ़ाक़ है यह है कि ईमान की कुव्वत व कैफ़ियत और ईमान में बढ़ोत्तरी हो जाती है और यह तजुर्बा है कि भले कामों से ईमान में ऐसी कुव्वत आ जाती है कि भले काम आसान और भले लगने लगते हैं कि उनको छोड़ने से तकलीफ होने लगती है और गुनाहों से नफ़रत पैदा हो जाती है इसी को हदीस में ईमान की मिठास कहा गया है जिस तिलावत से यह फाइदे न हों वह आला दर्जे की तिलावत नहीं है लेकिन फाएदे से वह भी ख़ाली नहीं है।

मोमिन की तीसरी सिफ़त यह है कि वह अल्लाह तआला पर तवक्कुल (भरोसा) करे मतलब यह है कि मोमिन अपने तमाम आमाल व अक़वाल में अल्लाह पर भरोसा रखे हदीस से साबित है कि इसका यह मतलब नहीं कि मोमिन असबाब (साधनों) को छोड़ बैठे बल्कि मतलब यह है कि असबाब को इख़्तियार ज़रूर करे मगर काम्याबी के लिए उसको काफ़ी न समझे बल्कि मुआ़मले को अल्लाह के हवाले करे और समझे कि असबाब उसी के पैदा किये हुए हैं और असबाब के फाइदे अल्लाह ही देता है लिहाज़ा होगा वही जो अल्लाह चाहेंगे एक हदीस में आया है कि ''अपनी हाजतें हासिल करने के लिए अच्छी कोशिश करो और अल्लाह पर भरोसा करो'' अपने दिल और दिमाग़ को सिर्फ माद्दी तदबीरों (भौतिक साधनों) पर न उलझा रखो।

मोमिन की चौथी सिफ़त इक़मते सलात (अच्छे ढंग से नमाज़ पढ़ना) है यानी नमाज़ उस तरह पढ़ी जाए जिस तरह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ पढ़ना बताया है अगर पूरी तरह नमाज़ के आदाब का लिहाज़ न किया गया सिर्फ सूरत अदा कर ली गई तो उसे नमाज़ पढ़ना तो कह लेंगे मगर इक़ामते सलात का मफ़हूम न पाया जाएगा।

शेष पृष्ठ.....39 पर

कुर्बानी के मसाइल

फिक़्ह की मोतबर किताबों से

कुर्बानी का बड़ा सवाब है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी से ज़्यादा कोई चीज़ अल्लाह को पसन्द नहीं कुर्बानी करते वक्त खून का जो कत्रा ज़मीन पर गिरता है तो जमीन तक पहुंचने से पहले ही अल्लाह तआला के पास मक्बूल हो जाता है। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि कुर्बानी के जानवर के बदन पर जितने बाल होते हैं, हर हर बाल के बदले में एक नेकी लिखी जाती है। बड़े दीन दारों की बात तो यह है कि अगर किसी पर कुर्बानी करना वाजिब भी न हो तब भी इतने बे हिसाब सवाब के लालच से कुर्बानी कर देना चाहिए। अगर अल्लाह ने माल दिया हो तो चाहिए कि जहां अपनी तरफ से कुर्बानी करे अपने वफात पाए हुए रिश्तेदारों की तरफ से भी कुर्बानी कर दे जैसे माँ बाप वगैरह। अगर यह न हो सके तो माल वाला अपनी तरफ से कुर्बानी ज़रूर करे कि उन पर वाजिब है।

० मुसाफिर पर कुर्बानी वाजिब नहीं।

० बकर ईद की दस्वीं तारीख से लेकर बारहवीं तारीख की शाम तक कुर्बानी करने का वक्त है।

० अपनी कुर्बानी को अपने हाथ से ज़ब्ह करना बेहतर है और खुद जब्ह करना न जानता हो तो किसी और से ज़ब्ह करवा दे।

० कुर्बानी करते वक्त जबान से नीयत पढ़ना और दुआ पढ़ना ज़रूरी नहीं है अगर दिल में ख़्याल कर लिया कि मैं कुर्बानी करता हूं और जबान से कुछ नहीं पढ़ा सिर्फ बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर कह के ज़ब्ह कर दिया तो कुर्बानी दुरुस्त हो गई। अगर याद हो तो कुर्बानी की दुआ पढ़ लेना बेहतर है। (अरबी दुआ यहाँ नहीं लिखी जा रही है)

० मालदार पर कुर्बानी सिर्फ अपनी तरफ से करना वाजिब है औलाद की तरफ से वाजिब नहीं है।

० बकरी, बकरा, भेड, दुम्बा, भैंस, भैंसा, ऊँट, ऊँटनी इतने जानवरों की कुर्बानी दुरुस्त है। झगड़े फसाद से बचने के लिए यहाँ गाय की कुर्बानी न करना चाहिए।

० भैंस, भैंसा, ऊँट में अगर सात आदमी शरीक हो कर कुर्बानी करें तो भी दुरुस्त है लेकिन शर्त यह है कि किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो और सबकी नीयत कुर्बानी या अकीका करने की हो।

० अगर बड़े जानवर में सात आदमी से कम लोग शरीक हुए तब भी कुर्बानी दुरुस्त होगी मगर किसी का हिस्सा सातवें हिस्से से कम न हो, अगर कोई शख़्स बड़ा जानवर (भैंस वगैरह) अकेले कुर्बानी करना चाहे तब भी

कुर्बानी दुरुस्त होगी।

० बकरी, बकरा साल भर से कम की कुर्बानी के लिए दुरुस्त नहीं। भैंस, भैंसा दो साल से कम उम्र के कुर्बानी के लिए दुरुस्त नहीं और ऊँट की उम्र कुर्बानी के लिए कम से कम पांच साल है, लेकिन 6 माह का दुंबा या भेड़ अगर इतना मोटा ताजा हो कि साल भर का मालूम होता हो तो उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त है वरना उसे भी साल भर का होना ज़रूरी है। बेहतर यही है कि 6 माह की भेंड़ी की कुर्बानी न करे चाहे वह खूब मोटी ताज़ी हो।

० जो जानवर अन्धा हो या एक आंख का हो या एक कान तिहाई या तिहाई से ज़्यादा कट गया हो। तिहाई दुम या तिहाई से ज़्यादा कट गई तो उस जानवर की कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

० जो जानवर इतना लंगड़ा हो कि सिर्फ तीन पैरों से चलता है उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

० जिस जानवर के बिल्कुल दांत न हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं। अगर आधे से ज़्यादा दांत गिर गये हों तो उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त नहीं।

० जिस जानवर के पैदाइश ही से कान नहीं हैं उसकी कुर्बान दुरुस्त नहीं।

० जिस जानवर की सींग पैदाइशी नहीं है, सींग थी मगर जड़ से टूट गई तो उसकी कुर्बानी न होगी। लेकिन अगर जड़ से सिर्फ खोल निकल गया है गूदा आधे से ज़्यादा बाकी हो तो कुर्बानी दुरुस्त होगी। चाहे दोनों सींगों में हो या एक में।

० खस्सी यानी बध्या बकरे, मेंढ वगैरह की कुर्बानी दुरुस्त है।

० कुर्बानी का गोश्त आप खाएं और अपने रिश्तेदारों को दें और फकीरों मुहताजों को खैरात करें और बेहतर यह है कि कम से कम तिहाई हिस्सा गरीबों को दें लेकिन अगर थोड़ा गोश्त गरीबों को दिया तो भी कोई गुनाह नहीं है।

० कुर्बानी की खाल को यूं ही खैरात कर दे या बेच कर उसकी कीमत खैरात करदे। वह कीमत ऐसे लोगों को दे जो जकात के मुस्तहिक़ हों।

० कुर्बानी की खाल की कीमत मस्जिद के काम में या किसी और नेक काम में लगाना दुरुस्त नहीं वह गरीबों का ही हक़ है।

० कसाई को उसकी मज़दूरी में कुर्बानी का कोई भी हिस्सा न दे बल्कि मज़दूरी अपने पास से दे।

० किसी पर कुर्बानी वाजिब थी मगर कुर्बानी के दिन गुज़र गये वह कुर्बानी न कर सका तो अब वह एक बकरी या भेड़ की कीमत खैरात करे। और अगर बकरी खरीद ली थी मगर कुर्बानी न कर सका तो वही बकरी खैरात करे।

० जिसने नज्र (मन्नत) मानी कि मेरा फुलां काम हो जाए तो मैं कुर्बानी करूँगा तो काम हो जाने पर उस पर कुर्बानी करना वाजिब है। और इस कुर्बानी का पूरा का पूरा गोश्त खैरात करना वाजिब होगा।

० अगर किसी वफात पाए हुए शख़्स को सवाब पहुंचाने के लिए उसके नाम से कुर्बानी

करे तो उस कुर्बानी का गोश्त भी अपनी कुर्बानी की तरह खाना खिलाना दुरुस्त है।

० अगर कोई शख़्स यहां मौजूद नहीं है उसके हुक्म के बिना अगर कुर्बानी कर दी गई तो यह कुर्बानी सही न होगी। और उसके हुक्म के बिना अगर उसकी तरफ से किसी बड़े जानवर में हिस्सा लगा कर कुर्बानी की गई तो किसी की भी कुर्बानी सही न होगी।

० कुर्बानी की खाल कसाई को उजरत में देना या किसी को भी उजरत में देना जाइज़ नहीं।

० कुर्बानी का गोश्त गैर मुस्लिम को भी दिया जा सकता है अलबत्ता उजरत में न दिया जाए।

अकीक़े का बयान

० किसी के यहां कोई बच्चा या बच्ची पैदा हो तो चाहिए कि सातवें दिन उस का नाम रखे और उसका अकीक़ा कर दे, अकीका करने से बच्चे की अलाबला टल जाती है और बच्चा महफूज़ हो जाता है।

० अगर लड़का हो तो उसकी जानिब से दो बकरे या दो बकरियां अकीक़े में ज़ब्ह करे और लड़की हो तो उसकी जानिब से एक बकरा या बकरी अकीक़े में ज़ब्ह करें और बच्चा हो या बच्ची सर के बाल उतरवा दें और वुसअत हो तो बाल के बराबर चाँदी खैरात कर दें।

० अगर सातवें दिन अकीक़ा न कर सके तो जब भी करे तो सातवां दिन होने का लिहाज़ करना बेहतर है मगर ज़रूरी नहीं। जिस रोज बच्चा पैदा हुआ है उससे पहले वाले दिन अकीके करे जैसे बच्चा जुमे को पैदा हुआ तो जब भी अकीक़ा करे जुमेरात को अकीका करे वह सातवां दिन होगा।

० सर के बाल चाहे ज़ब्ह से पहले उतरवाएं या ज़ब्ह के बाद दोनों बातें दुरुस्त हैं।

० अकीक़े के गोश्त का वही हुक्म है जो कुर्बानी के गोश्त का है, चाहे कच्चा तक्सीम करे चाहे पका कर खिलाएं।

० जिस जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है उसका अकीका भी दुरुस्त है।

० अगर लड़के की तरफ़ से एक ही बकरी अकीक़े में ज़ब्ह किया तब भी कोई हरज़ नहीं। कुर्बानी के जानवर में लड़के की जानिब से चाहे एक हिस्सा लें या दो हिस्से लें दुरुस्त है लड़की की जानिब से अकीके के लिए कुर्बानी के जानवर में एक हिस्सा लें।

० अगर गरीब हो और अकीक़ा न कर सके तो कोई हरज नहीं।

❖❖❖

सबै सहायक सबल के। कि कोऊ न निर्बल सहाय।।
पवन जगावत आग को। कि दीपहि देत बुझाय।।
सब निर्बल मिल बल करें। करैं जो चाहें सोय।।
तिनकन की रसरी बरी। करी निबन्धन होय।।

रौनक़ अली की मर्दानगी

—इदारा

रौनक़ अली एक खाते पीते किसान का बेटा है उसकी उम्र 18 वर्ष की है, उसकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी है, उसका कद 6 फिट है बदन भरा हुआ गोरा चिट्टा है, वह अपने घर वालों के साथ अपने खेतों में खूब मेहनत से काम करता है, घर और गांव में वह सबका चहीता है।

रौनक़ अली जिस गांव में रहता है उसमें पचास घर होंगे, सारे घर कच्चे, छप्पर वाले हैं हर घर में घर का असासा रखने के लिए एक दो कच्ची छत की कोठरियां भी थीं। गांव में अहीर, कोरी, पासी, लुहार, बढ़ई, कल्वार और दस घर मुसलमानों के थे, एक घर चमार का भी था जो गांव के बाहर रहता था। गांव में मुसलमानों की हालत दूसरों के मुकाबले में बेहतर थी उन्होंने गांव में चार कुएं बनवा रखे थे जिससे लोग अपनी पानी की ज़रूरतें पूरी करते थे, अजीब बात यह है कि उस वक्त के रवाज के मुताबिक चमार घर के लिए गांव से बाहर कुवां बनवाया गया था।

गांव के हर शख़्स के पास कम या ज़्यादा खेत थे सब अपनी खेती से गुज़र बसर करते थे, जिनके पास कम खेत थे वह ज़्यादा खेत वालों के यहां मजदूरी करके अपनी जरूरतें पूरी करते थे। गांव के लोगों में बड़ा मेल मिलाप था, कोई बीमार हो तो गांव के लोग उसको देखने और उसका हाल पूछने दौड़ पड़ते, बूढ़े लोग देहात की जड़ी बूटियों से उसका इलाज करते। शादी विवाह में एक दूसरे की मदद करते, किसी की मौत पर पूरा गांव पुर्से के लिए दौड़ पड़ता, रात में चोर चकार की आवाज़ सुन कर सारा गांव शोर मचा कर चोरों को भगा देता, किसी तरफ सियार भेड़िये की खबर लगते ही सारे गांव के लोग दौड़ पड़ते। खुदा न करे कहीं आग लग जाती तो सारे गांव के लोग अपनी अपनी बाल्टियां और घड़े लेकर दौड़ पड़ते और आग बुझा लेते।

उसी गांव में एक फुलबासा पासिन रहती थी उसके शौहर का इन्तिक़ाल हो चुका था गोद में साल भर का बच्चा था और एक दस साल की बच्ची, थोड़ा खेत था, माँ बेटी ज़्यादा खेत वालों के यहां मजदूरी कर के गुजर बसर करती थीं। कच्चा घर था, एक कच्ची कोठरी थी उस पर तरवाहा (बाहर निकला हुआ छप्पर) था उसके बाद आंगन था आंगन के बाद घर में आने जाने का दरवाज़ा था जिस पर दोनों जानिब निकला हुआ छप्पर था गर्मियों में मां बेटी दरवाजा खोलकर उस दरवाजे वाले छप्पर के नीचे बैठ कर हवा खातीं। पूरा घर कच्ची दीवारों से घिरा था जिन पर परछतियां पड़ीं थी, अन्दर कोठरी के बग़ल छप्पर के नीचे बावर्ची खाना था।

जाड़ों का मौसम था बच्चा तरवाहे में सो रहा था और मां बेटी दरवाज़े वाले छप्पर के नीचे अलाव ताप रही थीं, आंगन में बच्चे की कथरी (मोटा बिछौना जिस पर बच्चा बराबर पेशाब करता मगर उस का धोना मुश्किल होता उसे देहात के लोग वैसे ही सुखा लेते उसमें से सख़्त बदबू आती) सूख रही थी कि अचानक अलाव से दरवाजे वाले छप्पर में आग लग गई मां बेटी धूप वाली कथरी उठा कर बाहर आ गई और आग आग का शोर होने लगा, गांव के लोग दौड़ पड़े लेकिन दरवाजे के छप्पर से ऊँची लपटें उठ रहीं थी लोग, पानी फेंक रहे थे मगर बे फाइदा।

उधर फुलबासा का बुरा हाल था मेरा बच्चा मेरा बच्चा कह कर ऐसा लगता था कि बेहोश हो जाएगी, किसी के कुछ समझ में न आता था, सब समझ रहे थे कि बच्चे को अब नहीं बचाया जा सकता। रौनक अली भी आग बुझाने वालों में थे, उन्होंने देखा कि दरवाजे का छप्पर तो बुरी तरह जल रहा है मगर अभी तरवाहे तक आग नहीं पहुंची है और वहां तक आग पहुचने में देर भी न लगेगी।

रौनक अली को एक तदबीर सूझी उन्होंने उस कथरी पर दो बाल्टी पानी डाल कर तर किया और उसे फौरन ओढ़ कर जलते दरवाजे से जल्दी से अन्दर घुस गये और दौड़ कर बच्चे को लेकर बाहर आ गये, रौनक अली को कथरी ने जलने से बचा लिया। मगर उनके दोनों तलवे बुरी तरह झुलस गये जिनका हफ्तों इलाज हुआ मगर उन्होंने फुलबासा के बच्चे की जान बचा ली, फिर देखते ही देखते तरवाहे में भी आग लग गई और पूरा घर जल गया।

रौनक अली की इस मार्दानगी और हिम्मत का चर्चा गांव और इलाकों में बरसों रहा यहां तक कि आज भी हम उसका ज़िक्र कर रहे हैं।

कैसा था उस ज़माने का माहौल और कैसे थे उस ज़माने के लोग, नई रौशनी में हमने तरक्की जरूर की है लेकिन उस ज़माने की इन्सानी हमदर्दी हम से छिन गई है।

फुलबासा की इस मुसीबत पर गांव के लोग खड़े हो गये, किसी ने पतावर (सेठे कि पात्तियां जिन से छप्पर बनाया जाता था) किसी ने सेठा, किसी ने खर (गड़रा जिस की जड़ ख़स कहलाती है) दिया किसी ने, बांस दिये और हफ्ते भर के अन्दर फुलबासा की दीवारों पर पहले की तरह छप्पर नज़र आने लगे। कुछ लोगों न गल्ले से मदद की तो कुछ लोगों ने अपने पुराने कपड़े पेश किये इस तरह फुलबासा की मुसीबत में गांव वालों से मदद मिली। यह मदद फुलबासा के साथ खास न थी बल्कि उस वक़्त यही चलन था, फुलबासा के मुँह से गाँव वालों के लिए दुआएं निकलती मगर रौनक अली का एहसान उसने कभी न भुलाया और रौनक़ अली पर नज़र पड़ते ही देर तक दुआएं देती रहती।

❖❖❖

मदारिस-ए-इस्लामिया रौशनी के मीनार

हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी

मदरसों की बड़ी क़द्र की ज़रूरत है यह रौशनी के मीनार हैं, अगर यह न रहेंगे तो अंधेरा ही अंधेरा होगा तब कोई बताने वाला नह होगा कि अल्लाह तआला किस बात से राज़ी होता है, किस बात से नाराज़ होता है? और किस बात पर पकड़ होगी और किस बात पर पकड़ न होगी? इसका बताने वाला कोई नहीं रह जायेगा, इसलिए यह मदरसे चाहे देखने में कितने ही मामूली मालूम होते हों लेकिन यह बहुत अहम है, यह स्कूल व कालेज, जितने बड़े-बड़े स्कूल व कालेज हैं अगर वह न रहें तो आप का कोई बड़ा नुक़सान नही है, बस यही तो होगा कि बहुत बड़ी कोई नौकरी आपको न मिलेगी, आप कारोबार कर लीजिएगा, या किसी तरीक़े से अपना पेट पाल लीजिएगा, यही तो होगा! न होंगे आप **B.A.**, **M.A.** और **P.H.D.** आप काम तो चला लेंगे लेकिन यह मदरसे न हुए तो क्या होगा? कोई आपको बताने वाला न होगा कि किस बात से अल्लाह खुश होता है, किस बात से अल्लाह नाराज़ होता है? और किस बात से आखिरत में कामयाबी हासिल होती है, किस बात से आखिरत में तबाही होती है? तो इन मदरसों की आप क़द्र कीजिए और इनकी अहमियत को समझिए, हमारी ज़िन्दगी के स्रोत और कामयाबी के चश्मे इन्हीं से फूटते हैं, इन्हीं से हमको मालूम होगा कि कामयाब कौन है? नाकाम कौन है? लिहाज़ा इन मदरसों की क़द्र कीजिए, अगर उनकी नाक़द्री करेंगे तो यह अल्लाह तआला की गैरत के खिलाफ है। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः अहले सुन्नत से क्या मुराद है और अहले सुन्नत में किन किन लोगों का शुमार है?

उत्तरः अहले सुन्नत वह हैं जिन्होंने अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत के लिए सहाब–ए –किराम को नमूना माना, और वह यह हैं हनफ़ी, मालिकी, शाफई, हंबली और अहले हदीस, वल्लाहुआलम।

प्रश्नः अहले हदीस लोग हनफी, मालिकी, शाफई और हंबली मुसलमानों को ग़लत समझते हैं बल्कि कहते हैं कि तक्लीद शिर्क है ऐसी हालत में अहले हदीस को क्या समझना चाहिए?

उत्तरः वह अपनी गलत फहमी से मुकल्लिदीन को गलत और बाज़ अहले हदीस मुश्रिक कहते हैं, उनकी गलत फहमी दूर करना चाहिए। इल्म वालों को उनको बताना चाहिए कि हम इमामों की तक्लीद इस तौर पर करते हैं कि उन्होंने कुर्आन व हदीस के मफहूम और मुतालबे बयान किये हैं इसलिए तक्लीद नहीं करते कि उन्होंने शरीअत बनाई है। बल्कि इसलिए तकलीद करते हैं कि उन्होंने शरीअत को समझाया है अगर यह बात अहले हदीस हज़रात की समझ में आ जायेगी तो वह तकलीद को शिर्क न कहेंगे यह बात तो खुद अहले हदीस हज़रात में मौजूद है कि अनपढ़ या कम इल्म वाले इल्म वालों पर एतिबार कर के दीन में उनकी बात मानते हैं हमारे यहां दारुल उलूम नदवतुल उलमा में पचासों अहले हदीस तलबा पढ़ते हैं और इसटाफ़ में भी आधा दर्जन अहले हदीस हैं सब बाहम मेल व महब्बत रखते हैं और हनफ़ी इमाम के पीछे नमाज़ अदा करते हैं वह अगर तकलीद को शिर्क समझते तो हनफ़ी इमाम के पीछे नमाज़ न पढ़ते रही बात बाज मसाइल में इख़्तिलाफ़ात की तो इससे छुटकारा नहीं, इस बात को इल्म वाले ख़ूब जानते हैं मिसाल के तौर पर शैख़ नासिरुद्दीन अल बानी को सब अहले हदीस का बड़ा आलिम मानते हैं लेकिन उन्होंने अपनी किताब "सलातुन नबी" में हदीस से साबित किया है कि जहरी नमाज़ में इमाम के पीछे सूर–ए–फ़ातिहा पढ़ना जाइज़ नहीं इस बात को अकसर अहले हदीस नहीं मानते इसी तरह बहुत से मसाइल हैं जिनके बयान करने की यहां गुनजाइश नहीं पस अहले हदीस हजरात को चाहिए कि वह मुकल्लिदीन को ग़लत न कहें और मुकल्लिदीन को चाहिए कि वह अहले हदीस हज़रात को अपना भाई समझें मुकल्लिदीन के जो मसाइल अहले हदीस हज़रात की नज़र में किताब व सुन्नत से मेल नहीं खाते चाहिए कि उन मसाइल में मुकल्लिदीन के माहिर उलमा

से समझें या फिर खामोश रहें उन पर एतिराज से बचें और खुद अपनी तहक़ीक़ पर अमल करें।

प्रश्नः कुछ लोग अहले हीदस हज़रात के लिए मुनाफ़िक़ और ख़ारिजी जैसे अलफाज़ इस्तेमाल करते हैं ऐसा कहना कैसा है?

उत्तरः यह बहुत गलत है, अस्ल में यह जवाबी हम्ला है इसलिए कि कुछ अहले हदीस मुक़ल्लिदीन को शिर्क से जोड़ देते हैं। लेकिन ऐसा कहने वाले दोनों फ़रीक़ के लोग गुनहगार होंगे। सही यह है कि न मुकल्लिदीन मुशरिक हैं न अहले हदीस मुनाफिक ख़ारिजी या राफ़िजी हैं, दोनों फरीक़ अहले सुन्नत वल जमाअत से हैं, मगर इस तरह की ग़लत बातें करने वाले गुनहगार हैं। चाहिए कि अपनी–अपनी तहक़ीक़ पर अमल करें और एक दूसरे को अपना भाई जानें।

प्रश्नः बुजुर्गों के मानने का क्या तरीक़ा है जैसे ख़्वाजा अजमेरी, साबिर कल्यरी, मखदूम जहांगीर अशरफ किछौछवी, मख़दूम अब्दुल हक़ रुदौलवी और बहुत से दूसरे बुजुर्ग हैं जिनके उर्स होते हैं, उन बुजुर्गों की अ़कीदत व महब्बत में उनके उर्सों में शरीक होना उनके मजारात पर चादरें चढ़ाना या शीरीनी या नक्दी या चढ़ावा कैसा है?

उत्तरः जो बात आम लोगों में रवाज़ पा जाती है चाहे वह गलत ही क्यों न हो उसकी इस्लाह बहुत मुश्किल हो जाती है यही हाल बुजुर्गों की कब्रों, और उन पर उर्स करना उन पर मेले लगाना उन पर चादरें, मिठाई और दूसरी चीजें चढ़ाना ऐसा रवाज पा गया है कि उसका छुड़ाना बहुत मुश्किल हो रहा है। किताब व सुन्त में तो इन बातों का इशारा तक नहीं मिलता, सहाब–ए–किराम की ज़िन्दगियों में इन का कहीं पता नहीं बल्कि ऐसे कामों से सख़्ती से रोका गया है। बस सही बात यही है कि इन बातों का बुजुर्गों की अकीदत से कोई तअल्लुक नहीं, बल्कि ऐसे मेलों से उन बुजुर्गों को कोई फाइदा नहीं पहुंचता बल्कि यह काम उनकी रूह को तक्लीफ़ पहुंचाने वाले हैं। इसलिए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद अपनी कब्रे मुबारक पर मेला लगाने से रोका, गैरुल्लाह के सजदे से रोका, बिदअत से रोका इन क़ब्रों पर इन तालीमात की खिलाफ़ वर्ज़ी होती है इसलिए इन आमाल से उन बुजुर्गों को फायदे के बजाए तकलीफ पहुंचती है मगर इस पर रोक लगाना आसान नहीं है। लिहाज़ा अल्लाह तआला जिस को समझ दे वह अल्लाह वालों से महब्बत रखे जब उनका नाम ले तो रहमतुल्लाहि अलैहि कहे, अल्लाह तौफ़ीक़ दे उनको अपने तौर पर ईसाले सवाब करे और तमाम बिदअत और खिलाफ़ शरअ बातों से बचे और जो भाई इन बिदआत में मुब्तला हैं उनको हिक्मत व तदबीर से समझाए और उनके लिए बराबर दुआ करता रहे कि वह हक़ बात समझें और उस पर अमल करें।

शेष पृष्ठ.....37 पर

मानवता का सन्देश

यदि यह मुख्य बात मनुष्य के मन में विद्यमान रहे तो समाज के सुधरने में देर न लगे, फिर तो संसार से अत्याचार विदा हो जाए परन्तु यह बात हर मन में पैदा होना सरल नहीं है और यदि मनुष्य चाहे तो बहुत सरल भी है। हर मनुष्य को चाहिए कि वह किसी धर्म गुरु से यह बात सीखे। मानव जाति के लिए यह तत्व अति आवश्यक है और मानवता का यह वह सन्देश है जिसे कोई भी धर्म वाला नकार नहीं सकता।

रहीम कहते हैं :–

अमर बेल बिन मूल की प्रति पालत है ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज खोजत फिरये काहि।।

उस ईश्वर ने तो ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि बिना मूल अर्थात बिना जड़ की अमर बेल को भी उसकी जीविका पहुंचा कर उसे जीवित रखता है उसे छोड़ कर किसे ढूढ़ते फिरते हो। आरे वह तो व्हेल मछलियों और हाथियों के पेट भी भरता है। उस शक्ति को मान कर उस पर पूरा भरोसा रखें। कबीर कहते हैं :–

जा को राखे साइयां मार न सकिहै कोए।
बाल न बांका कर सकै जो जग बैरी हो।।

तो पहली बात तो यह हुई कि अल्लाह पर विश्वास हो मन में उसका प्रेम हो, धर्म गुरुओं से इस सत्य ज्ञान को प्राप्त करें हर दशा में उसका ध्यान रहे।

दूसरी बात यह है कि उसकी सृष्टि से प्रेम हो, मनुष्य के मन में दूसरे मनुष्य के लिए सहानुभूति हो, मनुष्य ही नहीं अपितु हर जीवधारी के लिए सहानुभूति हो यह शिक्षा भी हर धर्म में पाई जाती है अतः मानवता के सन्देश में इसको जोड़ना अनिवार्य है।

सहानुभूति चाहिए महाविभूति है यही।

यदि समाज में सहानुभूति का वातावरण उत्पन्न हो जाए तो समाज शान्तिमय हो जाए।

तीसरी बात जो हर धर्म में अभीष्ट है और जो मानवता का महत्वपूर्ण सन्देश है वह कर्तव्य प्रायणता है आज मानव जाति में इसकी बड़ी कमी दिखाई पड़ती है। समाज में यह अशान्ति इसी कर्तव्य प्रायणता के अभाव के कारण है। यदि हर अधिकारी, हर कर्मचारी अपने कर्तव्य का पालन करे, हर व्यापारी, हर किसान आपने कर्तव्य का पालन करे, हर गुरु, हर विद्यार्थी अपने कर्तव्य का पालन करे, वैद्य, डाक्टर, हकीम, इन्जीनियर, ठेकेदार, पुलिस, दरोगा के विषय में तनिक सोचिये तो कहाँ–कहाँ पानी मर रहा है और लोगों की कोताहियों से समाज कितना प्रभावित हो चुका है, यदि हर मनुष्य अपने कर्तव्य का पालन करे तो समाज कितना शान्तिमय हो जाए।

यह तीन बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं मारिफते इलाही (ईश परिचय) और उसका ध्यान, सहानुभूति, और कर्तव्य प्रायणता इसके पश्चात बहुत सी ऐसी बातें हैं जो एक

अच्छे समाज के लिए आवश्यक हैं और जो हर धर्म की शिक्षाओं में विद्यमान हैं जैसेः

सत्य अपनाना और असत्य को त्यागना, कबीर कहते हैंः–

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके मन में सांच है, ताके मन में आप,

चोरी, डकैती, क़त्ल, आतंक, व्यभिचार, जुआ, शराब, छल–कपट, धोखा, किसी की आबरू लेना आदि जितने भी काम जो दूसरों को धोखा देने वाले हैं, अपने भाइयों को कष्ट देने वाले हैं सभी धर्मों में उन से रोका गया है। अतः मानवता का यह सन्देश है कि हम मानव जाति को जो भी सुख पहुंचा सकते हैं उसमें कोताही न करें और हम किसी मानव को अपितु किसी जीवधारी को अकारण दुख न पहुंचाएं परन्तु मानव सर्वश्रेष्ठ है। अतः जो जीव जंतु मानव को कष्ट देने वाले हैं जैसे मक्खी, मच्छर, खटमल, चूहे आदि या जो मनुष्य के प्राण ही ले लेते हैं या बहुत दुख देते हैं जैसे बिच्छू, सर्प तथा हिन्सक पशु आदि

शेष पृष्ठ.....39 पर

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

प्रश्नः क्या दीन की तब्लीग़ हर मुसलमान पर फर्ज़ है?

उत्तरः दीन की ज़रूरी बातें सीखना हर मुसलमान पर फर्ज़ है लेकिन दीन का इल्म रखने वालों पर दीन की तब्लीग़ फर्ज़ किफाया है यानी अगर एक इलाक़े में या गांव या मुहल्ले में कुछ लोग दीन की तब्लीग़ का काम कर रहे हैं तो मुहल्ले के बाक़ी लोगों पर फर्ज़ न होगा लेकिन अगर मुहल्ले और इलाक़े में दीन का इल्म रखने वाले दीन की तब्लीग का काम नहीं कर रहे हैं तो सब गुनहगार होंगे।

प्रश्नः बैंक से सूदी कर्ज लेकर मकान बनाना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः मकान बनाना हो या कारोबार करना हो कोई भी काम हो सूदी कर्ज़ से दुरुस्त नहीं बहुत से लोग मजबूर होकर सूद पर रकम लेकर मकान बनाते हैं या कारोबार करते हैं वह गुनहगार होते हैं अल्लाह उनकी मजबूरी के सबब उनको मुआफ करे। हिफाज़त के लिए अपनी रकम बैंक में रखना जाइज़ है उस पर जो सूद मिले उसको सवाब की नीयत के बिना गरीबों को दे दे उन गरीबों को उस का खाना दुरुस्त होगा मगर जिस को सूद की रकम उस की जमा की हुई रकम पर मिली है वह उसे अपने लिए हराम समझे।

प्रश्नः मैं सरकारी अधिकारी हूं कम्पनी के लोग त्योहारों और तकरीबों में मुझे मिठाई और दूसरे हदीये तोहफे पेश करते हैं उसका लेना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः अगर कम्पनी वाले खुशी के मौक़ों पर आपको इसलिए हदीये पेश करते हैं कि आप उनके बहुत से सरकारी काम आसानी से कर देते हैं तो यह तोहफा लेना ठीक नहीं है इनसे बचें। वैसे आम इन्सानी तअल्लुक़ात में मुस्लिम या गैर मुस्लिम के बीच हद्ये तोहफे लेने और देने का रवाज़ बेहतर है इससे आपस में मेल व महब्बत और भाईचारा पैदा होता है।

प्रश्नः ओझड़ी खाना कैसा है?

उत्तरः हलाल जानवर जो ज़ब्ह किया गया हो उसकी ओझड़ी खाना हलाल और जाइज़ है।

❖❖❖

ये प्यार का पयाम है, सुनो सुनो सुनो!

—मुहम्मद इसहाक़ नदवी

ऐ देश वासियो सुनो, ऐ मेरे साथियो सुनो
ऐ आदिवासियो सुनो, ऐ माऊवादियो सुनो
ऐ सारे वादियो सुनो, ऐ सब विवादियो सुनो
ये प्यार का पयाम है, सुनो सुनो सुनो सुनो
ये वक्त की पुकार है, ये दिल से दिल की बात है
ये अम्न का पयाम है, ये शांति की बात है
ये ज़िन्दगी जो आपको मिली हुई है दान में
किसी पे जुल्म हो नहीं रहे ये बात ध्यान में
ये हुस्न क्यों है बेहया, ये इश्क़ क्यों उदास है
नगर नगर गली गली हवस की धूम–धाम है
ये आज क्यों मसक गई हैं इज्ज़तों की चादरें
ये आज क्यों दरक गई हैं दिल की सारी चाहतें
ये आज क्यों उछल गयीं हमारे सर से टोपियां
ये आज क्यों खिसक गयीं कमर से उनकी धोतियां
ये आज क्यों शरीफ लोग खा रहे हैं जूतियां
ये आज क्यों गरीब से ही छिन रही हैं रोटियां
ये आज क्यों हैं कर रहे किसान आत्म हत्या
ये आज क्यों हैं खा रहे जवान खुद ही संखिया
ये आज क्यों समाज में पुकार ही पुकार है
ये क़त्लो खूं, ये धांधली, ये क्यों भ्रष्टाचार है
ये आज क्यों निगाह तक्के नफरतों की आग है
ये लुट रही हैं इज्ज़तें, उजड़ रहा सुहाग है
ये हर तरफ कुराज है शान्ति है कहीं नहीं
ये रो रहा है आसमां, सिसक रही है ये ज़मीं
ये भेद–भाव, ज़ात–पात या और कोई छूत–छात
ये जुल्म के पहाड़ हैं, ये पाप हैं समान रात
ये भूत हैं, ये अज़दहे, ये नाग हैं ज़हर भरे
इन्होंने भस्म कर दिए वतन चमन हरे–भरे
ये सामराजियत का जिन जो विश्व पर सवार है
ये झूठ का गुबार है, ये जुल्म का सवार है
ये डाकुओं का बाप है, ये शैतनत का ख़्वाब हैं
इसी के क़हरो जुल्म से, ये ज़िन्दगी अज़ाब है
ये आज जो चहार–सू उबल रहा है आगो खूं
इसी के गहरे घाव से टपक रहा है खूँ ही खूँ
ये सब उसी के बाल हैं, जो फूँकते हैं देश को
अवाम को लड़ा भिड़ा के लूटते हैं देश को
ये आस्था का ज़हर जो बो दिया है देश में
भटक गई है आत्मा, पनप रही हैं नफरतें
ये कलयुगी की रात है जो विश्व है धुवां–धुवां
ये राक्षस की आग है जो उठ रहा है यूं धुवां
ये नन्हें बच्चों का लहू, ये औरतों की हाय–हू
पुकारते हैं आपको, दया करो दया करो
ये नौजानों का लहू, ये बेगुनाहों का लहू
पुकारता है न्याय को, न्याय दो कृपा करो
रिहाई मंच आ गया कि अब नया सवेरा हो
जुल्म के घरौंदे पर न्याय का बसेरा हो
सत्य युगी का भोर हो कि हर तरफ उजाला हो
नफरतों की धुन्ध में प्यार का उजाला हो
ये सुन लें वो समझ लें वो जो करते सबको तंग हैं
मतैं नहीं हैं जिनकी भंग वो सब हमारे संघ हैं
वो पूछते हैं कौन है जो कहता सबसे ठोस है
बता दो मेरे दोस्तो, इसहाक़ सरफरोश है

❖❖❖❖❖

मोमिन की पहचान .....

कुर्आन मजीद में आया है कि "नमाज़ हर गुनाह और बेहयाई से रोकती है (सूर–ए–अनकबूत 45) यह फाइदा अच्छे ढंग से नमाज़ पढ़ने ही पर मिलेगा।

मोमिन की पांचवीं सिफ़त यह है कि अल्लाह तआला ने उसको जो कुछ दिया है अल्लाह तआला की राह में उसको ख़र्च करे अगर उस पर ज़कात फ़र्ज़ है तो ज़कात अदा करे और वाजिब सदक़ात अदा करे उसके बाद अल्लाह की राह में मज़ीद सदक़ा व ख़ैरात करे। हम यहां कुर्आन मजीद में एक और मुक़ाम से मोमिन की सिफ़ात दर्ज कर रहे हैं सूर–ए–मोमिनून की आयत नं0 1–11 हमारे सामने है अनुवादः बेशक वह ईमान वाले अपने मक़सद में कामयाब हो गये जो अपनी नमाज़ खुशूअ़ व खुजूअ़ (विनम्रता) के साथ अदा करते हों, जो बेकार बातों से दूर रहते हैं और जो अपने माल की ज़कात अदा करते हैं जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं सिवाए अपनी बीवियों के या बांदियों के इनके अलावा जहां कहीं अपनी ख़्वाहिश पूरी करेंगे बड़े गुनहगार होंगे, जो अपने पास रखी अमानतों में ख़ियानत नहीं करते और किये गये वादों को पूरा करते हैं और नमाज़ पाबन्दी से पढ़ते हैं यही जन्नती लोग हैं। अल्लाह तआला हम सब में मोमिन की यह सिफ़ात व पहचान पैदा फ़रमाये (आमीन)।

❖❖❖

मानवता का सन्देश.....

इनसे बचाव करना, आवश्यकता पर इनको मारना उचित होगा। इसी प्रकार मानव सर्वश्रेष्ठ है। जिस धर्म में मांस मछली आदि खाने की आज्ञा है उसको हम मानवता के सन्देश में विवाद का विषय न बनाएंगे।

मानवता का सन्देश है मानव को सुख पहुंचाना और उसे दुख से बचाना और यह जब ही हो सकता है जब मानव के बनाने वाले अल्लाह में विश्वास हो, उसकी पकड़ का भय हो, उसके पुरस्कारों पर विश्वास हो और उससे प्रेम हो।

हमारा प्रण

1. हम एक सर्व शक्तिमान विधाता पर विश्वास रखते हैं जो भले कामों पर पुरस्कृत करता है तथा बुरे कामों पर दण्ड देता है।

2. हम मानवता का सन्देश मंच पर विवादित धार्मिक बातों को छेड़ कर मतभेद न पैदा करेंगे।

3. हम जाति पात के भेद भाव के बिना मानव जाति से सहानुभूति का व्यवहार करेंगे।

4. हम शासकीय कर्मचारी हों, सरकारी नौकरी में हों या प्रइवेट नौकरी में, हम व्यापारी हों या किसान, मजदूर हों या ठेकेदार जिस काम में भी हों अपने कर्तव्य को भलीभांति पूरा करेंगे।

5. हम हर उस काम से बचेंगे जिससे मानव जाति को कष्ट हो।

6. हम अपने देश के कानून का पालन करेंगे।

7. हम सत्य को अपनाएंगे और दूसरों को सत्य अपनाने की दावत देंगे।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

भ्रष्टों को भेजना होगा जेल-

पाकिस्तान क्रिकेट के लीजेंड इमरान खान का कहना है कि भारत व पाक दोनों मुल्कों के अधिकतर नेता भ्रष्ट हैं। फर्क इतना है कि हिन्दुस्तानी नेता को अपने भ्रष्टाचार को छुपाने की जहमत उठानी पड़ती है, जबकि पाकिस्तानी नेता खुल्लम खुल्ला लूट–खसोट कर रहे हैं। 'हमारे राष्ट्रपति को तो एक दौर में मिस्टर टेन परसेंट कहा जाता था'। वे यह भी मानते हैं कि इस उपमहाद्वीप में इस रोग को रोकने के लिए ऊपर से नीचे तक भ्रष्ट लोगों को जेल में भेजना पड़ेगा।

खास बातचीत में उन्होंने कहा कि उनके भारतीय दोस्त उन्हें पाकिस्तान का अन्ना हजारे कह रहे हैं, लेकिन वे खुद ऐसा नहीं मानते। उन्होंने यह जरूर स्वीकार किया कि वे अन्ना हजारे के प्रशंसक हैं। इमरान ने कहा, 'मेरा आंदोलन सिर्फ भ्रष्टाचार के खिलाफ नहीं है, बल्कि ज़यादा व्यापक है।

पसन्दीदा देश के दर्जे पर पाक पलटा–

पाकिस्तान भारत सरकार को उसे व्यापार के लिए सबसे तवज्जो वाले देश (एफ.एफ. एन.) का दर्जा दिये जाने के फैसले से फिल हाल पीछे हट गया है। पाक के प्रधानमंत्री ने कहा है कि पाक मंत्रीमण्डल में देश के वाणिज्य मंत्रालय को भारत के साथ केवल द्विपक्षीय व्यवार संबंधी वारता में आगे बढ़ने की जिम्मेदारी सौंपी थी।

गौरतलब है कि पाकिस्तान के सूचना मंत्री ने मंत्री मण्डल की बैठक के बाद घोषणा की थी कि भारत को एफ.एफ.एन. का दर्जा सर्व सम्मति के आधार पर लिया गया है। भारत पाकिस्तान को इस तरह का दर्जा वर्ष 1996 में भी दे चुका है। लेकिन पाक की तरफ से यह मामला लटकाया हुआ था।

इस घोषणा पर पाकिस्तान के दक्षिण पंथी कट्टर पंथियों और पंजाब प्रान्त के व्यवसायिक संगठनों ने नाखुशी जतायी थी और सरकार के इस फैसले का विरोध किया था। हालांकि यह बयान पाकिस्तान के पहले कथित रुख के विपरीत मालूम पड़ता है। भारत सरकार ने इस फैसले के लिए पाकिस्तान की सराहना की थी।

इज़ाइल के रक्षा बजट में भारी कटौती-

इज़ाइल ने सरकारी खर्चों में कमी लाने के मकसद से रक्षा बजट में भारी कटौती करने का फैसला किया है।

खबरों के मुताबिक रक्षा बजट में एक अरब शेकेल (26 करोड़ डालर) की कटौती कर इसे 2 अरब शेकेल पर लाने का प्रस्ताव है, जबकि पिछले साल यह रक्षा बजट 3 अरब शेकेल (84.073 करोड़ डालर) का था। हालांकि वित्त मंत्री याइर लैपिड ने इससे अधिक कटौती करने की मांग की थी। बजट में अन्य मदों में भी कटौती के प्रस्तावों पर हुई बैठक में फैसला लिया गया। इस बीच, रक्षा प्रमुख ने कटौती प्रस्ताव पर विरोध किया है।

❖❖❖